



# हिन्दी गद्य संग्रह-प्रदीपिका

三三三三

171

[illegible]

(一)

[illegible]

मन्त्रः - मन्त्रः मन्त्रः मन्त्रः मन्त्रः  
मन्त्रः - मन्त्रः मन्त्रः मन्त्रः मन्त्रः  
मन्त्रः - मन्त्रः मन्त्रः मन्त्रः मन्त्रः



( ३ )

( पृष्ठ—४ )

पुस्तकालय—( पुस्तक + आलय तत्पुरुष समास ) पुस्तक रखने का स्थान. लाइब्रेरी । भवन—मकान । उत्तेजना—उत्साह, यदाघा ।

अनुवाद—उल्था । पुनरुद्धार— पुनः + उद्धार विसर्ग संधि ) फिर से स्थापित ।

ज्ञाननाय—चिन्ताग्रस्त । रक्षा कां—यथाया । वस्तुतातेजक— ( वस्तुता + उत्तेजक गुणसंधि ) वस्तुता में उत्तेजना पैदा करने वाली । उद्योग—प्रयत्न ।

( पृष्ठ—५ )

पूना निवास-काल—पूना में रहते समय । प्रस्ताव—विचार प्रयोजन । अशकाश—कुट्टी । नवीन—नये । अनेक—भिन्न भिन्न ।

कंला—सदस्य । यूनिवर्सिटी—विश्वविद्यालय । आरंभ—शुरू । नगर—खिलाफ विरोध । वर्सायननामे—मरते समय संपत्ति की व्यवस्था ।

( पृष्ठ—६ )

उत्तराधिकारियों—( उत्तर + अधिकारियों दीर्घ संधि ) मृत व्यक्ति के बाद अधिकार पाने वालों । युक्ति-द्वारा—उपाय से । राजा—प्रसन्न । उपरांत—बाद ।

विश्वविद्यालयों प्रयत्न किया—विश्व विद्या-  
भाषा पढ़ाये जाने का उद्योग किया । हस्ताक्षर—( अक्षर—अक्षर दीर्घ संधि ) दस्तखत ।  
उपस्थित—रखा । योग्यता—युद्धिमान्नी ।  
पत्र—नरफ । विरुद्ध—खिलाफ । महाप्रभा-  
मान—व्यभिच्यत ।

सिद्धान्त । धार्मिक—( धर्म—इक, विजोयण ) धर्म सम्बन्धी । सामाजिक—समाज सम्बन्धी । औद्योगिक—( उद्योग + इक ) व्यापार सम्बन्धी । दूरदर्शी—किसी विषय के पहले से सोच लेने वाला, अप्रमेयो । संसार—स्थिर चित्त । प्रभाव—असर । अमिट—( अ । मिट क्पुरुष ममाम् ) नाश न होने वाला । विद्रोह—वगावत । विप्लव—उथल पुथल । अज्ञानि—ज्ञानि नहीं, उपद्रव । धृष्ट—नरुत । व्याख्यान—लेक्चर, वक्तव्य । सुधार—संशोधन कारी—नयी । पटिया—पट्टी । कंरा नहा करना चाहिये—सुधारक को किसी नये सुधार का आरम्भ न करना चाहिये । अर्द्ध निश्चित—आधा लिया हुआ । अर्द्ध निश्चित पूर्ण करें—अधुरे काम को पूरा करें, जो सुधार पहले से हो रहे हैं, उन्हीं को पूरा करें । अभिनयित—रन्जित । अभिलषित स्थान पर पहुँचना—कार्य में मरुत हाता । प्राचीनकाल—पुराने समय में ।

( १५—३ )

नूतन—नया । स्नान—स्नान । यहाय में बरबस न जायें—पहले के सुधारों में सम्यगनुकूल विज्ञित परिवर्तन कर दें, पर उसे रोकना न चाहिये अथवा उमका दूसरा ही रूप न देना चाहिये । जीवत प्रदान—जीवित डातना कार्य करने योग्य बनाना । सार्वजनिक-सभा—साम सभा, पब्लिक मीटिंग । दुर्मित—अकाल । अकाल पीडित—दुर्मित से मताये हुए । प्रशमापात्र—आदरणीय, सराहनीय । श्रेयानिक—नामरे महीने निकलने वाली । पत्रिका—पत्र । सामयिक—समयानुकूल । पुस्तकाकार—पुस्तक के रूप में । दिशदिशों—देश की मलाई बाहर वाला ।

संस्थापकों—कायम करने वालों स्थापना करने वाले आत्मसमर्पण आत्मन्यास, अपने को किसी कार्य में लगा देना

( ३ )

( पृष्ठ—४ )

पुस्तकालय—( पुस्तक + अलय तत्पुरुष समास ) पुस्तक रखने का स्थान, लाइब्रेरी । भवन—भवन । उत्तेजना—उत्साह, बढ़ावा ।

अनुवाद—उत्तर । पुनरुद्धार— पुनः + उद्धार विसर्ग संधि ) फिर से स्थापित ।

ग्राहनीय—विताप्रस्त । रत्ता की—बचाया । वस्तुतोतेजक— ( वस्तुता + उतेजक गुणसंधि ) वस्तुता में उतेजना पैदा करने वाली । उद्योग—प्रयत्न ।

( पृष्ठ—५ )

पूना-निवास-काल—पूना में रहते समय । प्रस्ताव—विचार, प्रयोजन । अवकाश—दुर्घी । नयोन—नये । अनेक—भिन्न भिन्न ।

फेलो—सदस्य । यूनिवर्सिटी—विश्वविद्यालय । आरंभ—शुरु । सर—सिताब विजेय । वर्तमानमाने—भरते समय संपत्ति की व्यवस्था ।

( पृष्ठ—६ )

उत्तराधिकारियों—( उत्तर + अधिकारियों दीर्घ संधि ) मृत व्यक्ति के बाद अधिकार पाने वालों । युक्ति-द्वारा—उपाय से । राजी—प्रसन्न । उपरांत—बाद ।

विश्वविद्यालयों प्रयत्न किया—विश्व विद्यालयों में देशी भाषा पढ़ाये जाने का उद्योग किया । हस्तक्षेत्र—( हस्त—हाथ + अक्षर—पक्षर दीर्घ संधि ) हस्तक्षेत्र । अधिकार—हक । उपस्थित—गया । योग्यता—बुद्धिमानी । समर्थन—प्रतिपादन । पद—नग्न । विरुद्ध—खिलाफ । महानुभाव—सज्जन । विराजमान—उपस्थित ।

( पृष्ठ—७ )

लक्षण—चिन्ह । ग्रन्थ—पुस्तक । ग्रन्थकारों—पुस्तक लिख  
वालों । विषय—परिचय । रसस्वाद—( रस+स्वाद तत्पु  
समास ) रसपान । मतपरिवर्तन—विचार बदलने ।

( पृष्ठ—८ )

लाभकारी—फायदेमंद । उपकारार्थ—भलाई के लिये । विद्य  
भुराग—विद्या में प्रेम । संचार—प्रवाह । उत्तजक—उत्साह दे  
वाले । प्रवर्तक—आरंभ करने वाले । संपत्ति—धन ।

सारांश

रानडे अपनी देश सेवा के लिये प्रसिद्ध पुरुष हो गये हैं  
उनका जीवन देश सेवा ही में बीता था । पुना में ऐसी कोई न  
संस्था नहीं थी, जिसमें इन्होंने भाग न लिया हो । इन्हु प्रका  
नामक मासिक पत्र के ये सम्पादक हुए । इन्होंने इस पत्र का इ  
योग्यता के साथ सम्पादन किया कि यह पत्र राजा तथा प्रजा दोनों  
का प्रिय हो गया । ये सन् १८७१ ई० में पुना के सचजज हुए और  
सन् १८९३ तक वहीं रहे । देशहित कार्यकर्ताओं की सदा उन  
यहाँ भोज लगी रहती थी । इनका मत देश में धार्मिक, सामाजिक  
औद्योगिक तथा राजनीतिक उन्नति एक साथ होनी चाहिये । ये धै  
और शान्ति से काम करने वाले थे । ये यहाँ के प्रदर्शित पत्र का ह  
अनुसरण करना ध्येयकर समझते थे । सार्वजनिक समा का  
ही कर्ताधर्ता थे । इन्होंने सन् १८७३ के अकाल पीड़ितों की बड़  
सहायता की । पुना के कायमन कालिज के संस्थापक में से एक  
आप भी थे । पुना पुस्तकालय और प्रार्थना समाज के भवन उन्  
की सहायता से बन थे । धम्म व्याख्यान माला के संस्थापक  
आपही थे । पुना का मराठी भाषा पुस्तकालय का अनुवाद करें  
वाले महा का इन्होंने ही पुनर्जाय किया ।

वस्तुनिष्ठता तथा, एतन् व्याख्यान माला इत्यादि के प्रबंध भी करने योग्य दिया था। एक पंचायत की स्थापना आपने ही करा दी जो मुझमें बाजों में सुनह करवा करती थी। हीरा गंग में डाउन हाल आप ही के प्रयत्न में बना था। एक अनाथालय आपने ही स्थापित कराया था। बम्बई हाईकोर्ट के जजरी वाले सन २२०००] इन्होंने निम्न निम्न संस्थाओं को दान दिया था। बम्बई विश्वविद्यालय में आप ही के उद्योग में मराठी, गुजराती भाषा को एन० ए० में स्थान मिला।

### प्रश्न और उत्तर

प्रश्न—नाम लिखे गये का सरल हिन्दी में अनुवाद करो।

सुधार करने वालों की केवल कीरो पट्टिया पर लिखना आरम्भ नहीं करना है। बुझा उनका कार्य यही है कि वे अक्षर लिखित वाक्य को पूर्ण करें। जो लोग कुछ किया चाहते हैं। वे अपने अनिलिपित स्थान पर तभी पहुँच सकते हैं जब उसे सत्य मान लें जो प्राचीन काल में सत्य कहा गया है, और वहास में कभी यहाँ और कभी वहाँ धीमा सा धुनाव दे दें, न कि उसमें बांध बांध अथवा उसको किसी नूतन खान को ओर बदल ले जायें।

उत्तर—सुधार करने वालों की उचित है कि वे बड़ों के प्रदर्शित मार्ग पर चले, उन्हें नवीन मार्ग का अवलम्बन करते सुधार कार्य में प्रवृत्त न होना चाहिये। किन्तु उनके अन्तर्गत कार्य अभी रह गये हैं, उन्हींको पूरा करना चाहिये। वे अपने कार्य में नमी भराने हो सकते हैं, उन्हीं को सत्य को मान लें कि प्राचीन काल में जो माना गया है, वह सत्य है ही नम्रप्राप्तुल उन सुधा



के प्रवाद में वे किञ्चित् परिवर्तन कर सकते हैं, किन्तु एकदम उभे राक कर नये मार्ग के द्वारा सुधार का नहीं हो सकता ।

२ प्रश्न—रानडे का देशाभ्रति के विषय में क्या विचार था ?

उत्तर—ये धार्मिक, सामाजिक राजनैतिक तथा उद्योगिक उन्नति  
साथ साथ चाहते थे ।

३ प्रश्न—नीचे जितने शब्दों से सज़ा बनाया ।

यनना, सामाजिक, औद्योगिक राजनीतिक, स्थापित ।

उत्तर—थनावट, समाज, उद्योग, राजन्यानि स्थापना ।

४ प्रश्न—रानडे के विषय में क्या जानते हो ?

उत्तर—इनका पुरा नाम महादे। गोविन्द रानडे है। महादेव  
गोविन्द रानडे का जन्म मासिक जित्ते के निकाड़ गाँव  
में सन् १८४२ के १८ जनवरी को हुआ। इनके पिता  
का नाम गोविन्दराय भाऊ आर माता का नाम गोपिका  
बाई था। बाल्यावस्था में ये बड़े सुस्त और लज्जित  
स्वभाव के थे। इनका शरीर भा यद्दुत दुर्बल था। इनकी  
माता सदा चिंतन रहतां थी कि यह बालक क्या कर  
सकेगा।

इनकी प्रारम्भिक शिक्षा मराठी की हुई। बाद में ये कोल्हापुर में एक अग्रवा स्कुल में भर्ती हुए पर इस स्कुल में अग्रवा की कोई इजाजत नहीं थी। वे वहाँ से निकलकर ईश्वरविन्द्य दास स्कुल में भर्ती हुए। वहाँ से भी वे निकलकर ईश्वरविन्द्य दास स्कुल में भर्ती हुए। वहाँ से भी वे निकलकर ईश्वरविन्द्य दास स्कुल में भर्ती हुए।

पढ़ते भी थे और पढ़ाते भी थे। इन्हें १०) मासिक वेतन मिलने लगा। इसके तीन वर्ष बाद ये सीनियर फेलो चुने गये और इन्हें १२०) मासिक वेतन मिलने लगा। सन् १८६२ में बी० ए० और बी० ए० आनर्स की परीक्षा इन्होंने पास की और इन्हें एक म्यर्चपदक और २००) की पुस्तकें पारितोषिक में मिलीं।

सन् १८६४ में उस समय के नियमानुसार रानडे को एम० ए० की डिग्री बिना परीक्षा दिये ही मिल गयी। सन् १८६६ में इन्होंने एल० एल० बी० की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की। इसी वर्ष आनर्स इनला की परीक्षा आपने पास की।

वफालत की परीक्षा पास करते ही रानडे को २००) ४० मासिक पर शिक्षा विभाग में मराठी अनुवाद करने का स्थान मिला। ये २२ मई सन् १८६६ से १० नवम्बर सन् १८६७ तक इन पद पर रहे। इस बीच में ये सरफार की ओर से अखिल बोट की रियासत में भेजे गये, वहाँ इनका कार्य दवा ही उत्तम हुआ। अतः ४००) मासिक वेतन पर कोल्हापुर में ये न्यायाधीश चुने गये पर इन्होंने इन पद से इस्तीफा दे दिया और एल्फिन्स्टन कॉलेज में वे प्रोफेसर हो गये। सन् १८७१ में इन्होंने एडवांसेट की परीक्षा पास की। एडवांसेट की परीक्षा पास करते ही ये बम्बई के मासिक मजदूर नियुक्त किये गये। बाद में माला काठकोट के मासिक मजदूर हुए। बाद में पुनः वे मासिक बदल दिये गये।

सन् १८७३ में इन्होंने सन् १८७३ में मासिक मजदूर बम्बई के मासिक मजदूर नियुक्त किये गये। वहाँ में अखिल बोट के मजदूर के रूप में कार्य करने लगे। २३ फरवरी १८७४ में वे सन् १८७४ में

के खफीका जज हुए। इसके बाद ये डाक्टर  
जगह पर स्पेशल जज नियुक्त किये गये। सन् १८६२ में  
ये बम्बर हाईकोर्ट के जज नियुक्त किये गये। सन्  
में ही ये लेजिस्लेटिव कौंसिल के मेम्बर हुए। इनकी  
सेवा के विषय में देशों सरांशा। इनका स्वभाव सात्विक  
था। धैर्य, निस्पृहता, लज्जा आदि गुणों के भण्डार थे।  
विद्यामिच्छा, नम्रता पितृमति ईश्वर में विश्वास गंभीरता,  
कार्यकुशलता की खासी गिता मिलती है।

सन् १९०१ के ८ वीं जनवरी को आपका स्वर्गवास  
हुआ।

## २-दुराश

( पृष्ठ—६ )

शम्भुद्वार्य—जाफरानी—केसर। बूटो बानकर—मंग पी कर।  
ख्यपाली.....ढोली कर दो पी—अनहोनी धातें सोचना। अकई  
—कदम। स्वाधीनता—स्वतन्त्रा। तूल घरज—लम्बाई चौड़ाई।  
सीमा—हृद। उल्लंघन—पार। दूसरी दुनिया—अन्यत्र। सुरीली  
—सुर सहित। कनरसिया—गान सुनने के प्रेमी। अमृत दाजना  
—मधुर शब्द बरसाना।

उक्त—कहा हुआ। अकल बकर में पड़ी—समझ में नहीं  
आयी। मजार—राग विशेष जो कर्ण श्रुति में गाया जाता है।  
विकास—आविर्भाव। विधि—प्रथा। निर्मल—निर्मल)  
शुद्ध माफ।

( पृष्ठ—१०१ )

श्रुति विषयम श्रुति में उल्लेख कर।

मित्रवर्ग—मित्र मण्डली । प्रतिनिधि—किसी व्यक्ति का  
स्थानापन्न मनुष्य ।

समस्या—विषय । कृष्ण—यहाँ राजा पञ्चमजार्ज मे अभिप्राय  
है । उद्धव ने तात्पर्य यहाँ बड़े लाट मे है । वज्रवासी से अभि-  
प्राय वज्राजन से है ।

### सारंश

प्राचीन समय में भारत में जितने त्यौहार मनाये जाते थे उनमें  
राजा वज्रा देने में शामिल होते थे । इस पाठ होली के न्योहार का  
श्रीकृष्ण के साथ मनाने का वर्णन है साथ ही यह भी दर्शाया गया  
है कि अथ समय के फेर से हमारे राजा हम लोगों के त्यौहार में  
शामिल नहीं होते । जब श्रीकृष्ण राजा थे, उस समय सभी वज्रा  
उनके यहाँ जाती थी और वे वज्रा के साथ बड़े प्रेम से होली खेलते  
थे, पर आज हमारे राजा हमसे बहुत दूर रहते हैं, उनके प्रतिनिधि  
वायसराय जो भारतवर्ष में रहते हैं, उनके यहाँ साधारण वज्रा का  
पहुँचना ही असम्भव है, त्यौहारों में शरीक होने को कौन कहे ।  
अथ राजा वज्रा के मिल कर होली खेलने का समय ही नहीं  
रहा ।

### प्रश्नोत्तर

१ प्रश्न—कृष्ण हैं, उद्धव हैं, पर वज्रवासी उनके निकट भी नहीं  
फटकने पाते । इस वाक्य में कृष्ण, उद्धव वज्रवासी से  
क्या तात्पर्य है ।

उत्तर—कृष्ण से अभिप्राय राजा का है, उद्धव से वायसराय का  
और वज्रवासी से भारतवासी का है ।

२ प्रश्न—कनरत्निया, अमृत ढालना चक्र में पड़ना, फटकने पाते  
इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो ।



( ११ : )

( पृष्ठ—१३ )

चिता पर एक पाँव रखे बैठे हैं—मरने का तैयार हैं। कर्म में पाँव लटकाना—मरना। कष्टित—( कष्ट + इत ) दुःख। कुंठित—लज्जित। अस्मर्यता—शक्ति होनता। तोंदण—तेज। अनिष्ट कारक—( अन + इष्ट + कारक ) हानि करने वाले। पानी मरी खाल—जोन्दा आदमी। अमंगल—दुराई। अजक—अनमर्य। अन्तःकरण—हृदय। धर्म पंथी—धर्म के मार्गी। पौरुष—सामर्थ्य। मननशील—विचारवान। खयालो—कमीना। नथ—नया।

( पृष्ठ—१४-१५ )

मौखिक—( मुख से मौखिक विरोध घनता है ) जवानी। लकोर के फकोर—शाखों भली या बुरी प्रथा पर चलना। अमरौती—अमृत। कौवे के पिपय में कहा जाता है, अमृत पिये हैं इस लिये बहुत दिन जीते हैं। मदुधोगी—( मत् + उधोगी ) उत्तम प्रयत्नों। बुट्टि—कमी। योढ़ी मी घातों—अल्प समय। वृद्धजीवन—बढ़ी जिन्दगी। शुधूषा—सेवा। अतिन्यता—अत्यंत गुरुता, अनस्थाविरता। बंधुषास्तल्य—कुटुम्ब प्रेम। विद्या वृद्ध—विद्या में बड़। ज्ञानवृद्ध—ज्ञान में बड़े। तपोवृद्ध—( तपः + वृद्ध विस्तर संधि ) तप में बड़े। आपन पेट हार मैं न देहों काह। जब अपना ही पेट का लाला पड़ा है तो दूसरे को क्या है। पले नग—नृत्य के शब्द या पदपद—( पाव + अक्षर ) माने अंग। धृष्टान्त—नकल रोम्य निरी—विह्वल। खारिड—हंटा। कल्लोनी—झेली।

इसका का मापार्य—मोग की इच्छा दूर हो गयी अब मान ना न उठा गया। जो आत्मों उन से वे भी मर चुके। धीरे धीरे कुछ बहा उठने पर आता है मानने अंधेरा हो जाता है। हे बुट्ट ! फिर मैं अपने का हानि तुन रूप काश्चरिद होता है।



प्राप्ति उनको उसी रास्ते पर चलने दो। ये तो थोड़े दिन में चल ही  
वसँगे। वृद्धों को चाहिये की जो कुछ चन्द्र राज की उनकी जीन्दगी  
है, उसमें भगवद्भजन कर के अपना परलोक बनाये। वृद्ध जनों  
की सदा हमें सेवा करनी चाहिये। ये भले हों या बुरे हों तो हमारे  
ही।

### प्रश्नोत्तर

१ प्रश्न—वृद्ध जानों से नवजवानों को क्या शिक्षा मिलती है ?

उत्तर—वृद्धों से हमें उन बातों की शिक्षा मिलती है, जो पुस्तकों  
के पढ़ने से नहीं मिलती। सांसारिक बातों का उनको  
अच्छा अनुभव रहता है, जो कुछ कि वे दुनियाँ में रह कर  
अनुभव प्राप्त किये हैं, उन बातों की भली भाँति मुझे  
शिक्षा मिल जाती है, हमारे भागे का हमारा जीवन  
मुख्य कर हो जाता है, संसार के ऊँच नीच बातों का  
ज्ञान हमें प्राप्त हो जाता है। वृद्धों के उपदेशों पर चलने  
से हमारा संसार मार्ग मुख्य कर हो जाता है। हमारे  
जीवन मार्ग के अनेक फाँटे दूर हो जाते हैं।

२ प्रश्न—नाँचे लिखे गद्य का अपनी भाषा में अनुवाद करो।

चार दिन के पाहुन कलुष्मा, महली अथवा कीड़ों की  
परसा हुई घाली, कुछ चमराती खाके खाये हैं नहीं,  
कीच के घच्चे हैं नहीं, बहुत जियेंगे दस वर्ष। इनने  
दिन में मर पच के, दुनिया भर का पोकदान घन  
ब जगो के तलवे खाटके अपने स्वार्थ के लिये पराये  
दिन में बाधा करने भी तो किननों को भी जय  
इन भाषियों का एक बड़ा समूह हमारे दरें पर जा  
रहा है तब आगिर छोड़ दो दिन में आज मरे कल हमारा



दिन होना है। फिर उनके पोड़े हम अपने मनुष्यों में घुटि क्यों करें। जब थोड़ी सी घातों को जोन्दगी के लिये अपना बेहंगापन नहीं छोड़ते तो हम अपनी घृहजोषनामा में स्वधर्म क्यों छोड़ें हमारा यही कर्त्तव्य है कि उनकी शुभ्रता करने रहे क्योंकि भते हाँ या घुरे पर हैं हमारे।

उत्तर—बूढ़ों की चंदरोजा जिन्दगी है, मरने पर मल्लुये मल्लुती कीड़े आदि के ये भोजन हाने। अमृत पीकर ता आये ही नहीं। कोण क चरने भा नहीं तो यमर हो। व्याह मे व्यादे दस यय जायेंगे। कितने दिन। लखते बूढ़ने अपनी घुरी करनी पर दुनिया मे थू थू हा कर, अपने स्वाध के लिये दूसरे के डाँट फटकर मुन कर भी दूसरे का मनाई में कितनी बाधा करगे, पाँच या दस यय जब तक जायेंगे तभी तक न। दूसरे ये बाधा हा नया पढ़्या सकने है, जब कि जनता एक दूसरे हा माग हा अवलम्बन किये है, आविर आज कल इनका मरना हा है। फिर दूसरा दिन आवेगा, ये बाधा पढ़्याने घात रही न जायेंगे। फिर इसलिये हम को अपने मन्काय मे क्यों न करना चाहिये। जब थोड़ा मनय के लिये वे अपना घुरा माग नहीं छोड़ते तो हम अपने दीप जोषन के मन्काय हा क्या त्यागें। हमारा यही धर्म है। क उनका मे। करन रह आविर भते हाँ या घुरे है ना हमारे ही।

३ प्रश्न—यादवयय घृजीवन मनुष्याय देजायकाक जगद किम किम जगद मे गत है यादवयय न इस मेन को क्या कहत है।



सामग्री—मोड़ की शीर्ष । झाड़ू—प्याऊ । कपना—पंख—विचार  
गति । घार बड़ना—सीधे जाना

१७

दैनिक—प्रति दिन । पच—अन्वेषण । घटनाघात का बाधक की  
सिर पर रख कर—नवान समाचार में नष्ट हुए । माधन—मिली  
हुई । वणनीय—बचान करने योग्य । क. र. न. कमी । यथार्थ—  
( यथा )—इष्ट गुण सधि परिपूर्ण । प्रविभा—वर्द्ध । सामयिक—  
समयानुकूल । चलन निरन—वर्धित म म अथ कर समझार रूप  
मत्वन निहाल लेना है । ना सामन मनुष्य का चारथ है, उसकी  
गुणों का निकाल लेना है ।

घटनाघात के कार्त्तव्यनिक द्वारा काम का चमकार रूप मत्वन  
ऊँचे दर पर धेसंगा—चम डग काम का मत्वन अधिक मूल पर  
धिकता है, धेमे ही म मत्वन चमकार गुण कदाभिया का अर्थ  
पारितोषिक ल कर प्रकाशन के लिये दूना । काफूर—दूर ।

छाँख कान गोल कर—छाँया में घटनाघात को देखते और  
कानों में जहाँ कहीं जा बात हा रहा था सुनने । हाट—बाजार ।  
उद्देश्य—विचार । शाब्दिक—शब्द सम्बन्धी । प्रनेत्तरी—प्रश्न  
और उत्तर, मधाल जवाब । कथना दुष्मा निकरा—राजक वाक्य ।  
उड़ा लिया—स्मरण कर लिया ।

( १७ )

( पृष्ठ—२२ )

जंग लगी विद्या की हुरी को गरीबों की गर्दन पर ही तेज किया करते थे—अपनी अन्धभ्रष्ट विद्या से गरीबों की से पैसे बसूल किया करते थे । अजोर्ण—अनपच । कोटर-लीन—खोखली, घसी हुई । जड़ूंगा—लिखूंगा ।

वास्तविक—असर्जनी । कर्कशता—निद्रता । धातु करने—दुर्दशा बनाने ।

( पृष्ठ—२३ )

निद्रा टूट गयी—सचेत हुआ । नजर कितनी है—उसकी निगाह में कितने मूल्य की जंचता है । रवि का प्रकाशन किया—इच्छा जाहिर की । साहित्याभिरुचि—( साहित्य + अभि + रुचि ) साहित्य में चाह । वृद्धि—वढ़ती । चरित्र विश्लेषण-शक्ति—चरित्र विश्लेषण शक्ति । पुरस्कार—लिखाई । नेकी कर रुपें में डाल—नेकी करके फल की आना न करना ।

( पृष्ठ—२४ )

सडियन—रही । थोष्ट रचना—उत्तम लेख । असाधारण—मामूली नहीं, उत्तम । पंख निकलना—सचेत होना ।

प्राहुर—खरीदार । गरुड—हुआर कातिक । लुनायने—बित्ता-कर्षण । गौरा—अंग्रेज । जलमुगाधियों—जल में रहने वाली पत्नी । स्निग्ध—सुझावने, चिकने । ताडवृक्ष—शिव का नृत्य विरोध, जिससे प्रलय काल उपस्थित हो जाता है, अन्याचार ।

गडप—डूब गया । हिंसा शक्ति—जोष वध के काम । चरितार्थ—सफल विज्ञान—शून्य, पकान्त ।

( पृष्ठ—२५ )

नन्द नाथन—मुन्दरता की नजा रहा है । आभूषणों—  
। ६२ ।

सामग्री—मैट की चीजें । डाट—खाका । कल्पना शक्ति—विचार शक्ति । घार बढ़ना—तीव्र होना ।

( पृष्ठ—२० )

दैनिक—प्रति दिन । पय—अखबार । घटनाओं के योफ़ को सिर पर रख कर—नवीन समाचारों से भरपूर । मिश्रित—मिली हुई । वर्णनीय—बखान करने योग्य । अकाल—कमी । ययेए—( यया + एए गुण संधि ) परिपूर्ण । प्रतिभा—बुद्धि । सामयिक—समयानुकूल । चलते फिरते चरित्रों में से मथ कर चमत्कार रूप मखन निकाल लेती हैं—जो सामने मनुष्य का चरित्र है, उसकी गूँथों का निकाल लेती है ।

घटनाओं के काल्पनिक डेरी फार्म का चमत्कार रूप मखन ऊँचे दर पर बेचूँगा—जैसे डेरी फार्म का मखन अधिक मूल पर शिकता है, वैसे ही मैं अपने चमत्कार पूर्ण कहानियों को अच्छा पारितोषिक ले कर प्रकाशन के लिये दूँगा । काफ़ूर—दूर ।

धोल फान खोल कर—झाँसों में घटनाओं को देखते और फानों से जहाँ कहीं जा बातें दौं रही थीं सुनते । डाट—वाजार । उद्देश्य—विचार । गाम्भिर्य—गम्भीर सम्बन्ध । प्रश्नोत्तरी—प्रश्न और उत्तर, सवाल जवाब । फटना दूमा निकरा—रोचक वाक्य । उड़ा लिया—स्मरण कर लिया ।

( पृष्ठ २१ )

मानव बुद्धि—मनुष्य ज्ञाति । निरोक्षण—दृष्टि भाल । लडुआ—हृष्य का एक गहना । व्यञ्जना—व्यवहारदृष्ट, व्याकुलता ।

भाजनागरान्न—( न'जन + उपभोजन ) भाजने व खाद । उपादान मशह—सामग्री एकत्रित करना ।

( पृष्ठ—२२ )

जंग लगी विधा की हुरी हो गरीबों की गदन पर ही तेज किया करते थे—अपनी धन्यस्त विधा से गरीबों को से पैसे बसूल किया करते थे । अजीर्ण—अनपच । काटर-लीन—खाखली, धनी हुई । जड़ गा—निर्भूँ गा ।

धास्तयिक—प्रसली । कर्कशता—निदुरता । धातु करने—  
दर्दना घनाने ।

( पृष्ठ—२३ )

निद्रा टूट गयी—सचेत हुआ। नजर कितनी है—उसकी निगाह में कितने मूल्य को जंचता है। रवि का प्रकाशन किया—इच्छा जादिर की। साहित्याभिरुचि—( साहित्य + अभि + रुचि ) साहित्य में चाह। वृद्धि—बढ़ती। चरित्र पिश्लेगण शक्ति—चरित्र विवेचन शक्ति। पुरस्कार—लिखाई। नेकी कर कुपे में डाल—नेकी करके फल की धारा न करना।

( पृष्ठ—२४ )

सडियत—रही। धेष्ट रचना—उत्तम कंठ। असाधारण—  
मामूली नहीं, उत्तम। पंख निकलना—संचेत होना।

प्राहक—खरीदार । शरत—कुम्हार कातिक । लुभायने—विचित्र-  
कर्यक । गोरा—अंग्रेज । जलमुगांधियां—जल में रहने वाली पत्ती ।  
स्निग्ध—सुहायने, चिकने । तांडयनृत्य—जिध का नृत्य धिमेप,  
जिससे प्रकय काज उपस्थित हो जाता है, अत्याचार ।

न उप—हूँ गया । हिंसा श्रुति—जीव वध के काम । चरितार्थ—सफल । विजय—शून्य, एकान्त ।

( पृष्ठ—४५ )

मादय साधन—सुन्दरता को मजा रहा है । आभूषणों—



मुन मुँह पीला पड़ गया । जिस अंग्रेजी उपन्यास में उसने पढ़ा था कि कहानी लिखने से आदमी भालामाल हो जाता है, उस पुस्तक को उसने फिर पढ़ा । उसमें लिखा था कि ऐसे पत्र सम्पादकों से न मिलें जो पत्र का संचालक हों । वे लेख का पारितोषिक नहीं देते । इस पर उसने दूने उत्साह से कहानी लिखना आरम्भ किया ।

एक दिन वह एक तालाब के किनारे बैठ कर निबन्ध लिख रहा था । उसी तालाब पर एक अंग्रेज जलमुर्गावी का गिकार कर रहा था । उसने बंदूक में एक जलमुर्गावी को मारा । उसे निकालने के लिए जल में घुसा तो डूबने लगा । कहानी लेखक ने उसे निकाला । वह जिले का कलक्टर था । उसने कहानी लेखक को अपने बंगले पर बुलाया और उन्हें समझा दिया कि कहानी लेखक घनने से संसार का काम नहीं चजता । उसे १० मासिक धनन को पेशकारी दी और जब वह गवर्नर हुआ तब इसे डिप्टी के जगह पर कर दिया ।

### प्रश्नोत्तर

१. प्रश्न—इस कहानी का भाव लिखो ।

उत्तर—आज कल के नवयुवकों को कहानी लिखने की धुन सवार रहती है । इसकी सनक उनके सिर पर पेशी सवार रहती है, उन्हें अपने घरवार की भी चिन्ता नहीं रहती । पर हमारे देश के पत्र सम्पादकों में अधिकतर पत्र संचालक भी हैं, ये निबन्धों के लिये रुपये खर्च करना नहीं चाहते । मुफ्त में उन्हें भला या बुरा जो कुछ निबन्ध मिल जाते हैं उन्हीं को अपने पत्र में छाप देते हैं । अतः कहानी लेखक घनना तो आसान है, पर भाति होना





सुन मुँह पीला पड़ गया। जिस अंग्रेजी उपन्यास में उसने पढ़ा था कि कहानी लिखने से आदमी मालामाल हो जाता है, उस पुस्तक को उसने फिर पढ़ा। उसमें लिखा था कि ऐसे पत्र सम्पादकों से न मिले जो पत्र का संचालक हों। वे लेख का पारितोषिक नहीं देते। इस पर उसने ठूने उस्ताद से कहानी लिखना आरम्भ किया।

एक दिन वह एक तालाब के किनारे बैठ कर निबंध लिख रहा था। उसी तालाब पर एक अंग्रेज अलमुगांधी का गिकार कर रहा था। उसने बंदूक में एक अलमुगांधी को मारा। उसे निकालने के लिए जल में घुसा तो डूबने लगा। कहानी लेखक ने उसे निकाला। वह जिले का कलेक्टर था। उसने कहानी लेखक को अपने बंगले पर बुलाया और उन्हें समझा दिया कि कहानी लेखक बनने से संसार का काम नहीं चलता। उसे १०) मासिक वेतन का पेशकारी दो और अब वह गवर्नर हुआ तब इसे डिप्टी के जगह पर कर दिया।

### प्रश्नोत्तर

१ प्रश्न—इस कहानी का भाव लिखो।

उत्तर—आज कल के नवयुवकों को कहानी लिखने की पुन सवार रहती है। इसकी सनक उनके सिर पर ऐसी सवार रहती है, उन्हें अपने घरबार की भाँ चिन्ता नहीं रहती। पर हमारे देश के पत्र सम्पादकों में अधिकतर पत्र संचालक भी हैं, ये निबंधों के लिये दरपे दरप करना नहीं चाहते। मुझ में उन्हें भला या बुरा तो कुछ निबन्ध मिल जाते हैं उन्हीं को अपने पत्र में छाप देते हैं। अतः कहानी लेखक बनना तो आसान है, पर प्राप्ति होना



गया। मैंने उसे धन्यवाद दिया और अपने मन में कहा कि आज इसी डाक्टर के ऊपर इसकी कर्तुत को नोटबुक में लिखूँगा। और फिर ऐसा निश्चय लिखूँगा कि जब कभी यह सुनेगा सिर पीट के रह जायगा।

३ प्रश्न—प्रयाग विश्व विद्यालय के अंदर प्रेजुपट के लिए डाक्टरों या वकालत के सट्टा समय और धन सापेक्ष व्यवसायों के निवा नौकरी में नायब तहसीलदारी या सब रजिस्ट्रारी के पद ही अधिक आकर्षण रखते हैं, पर उनकी प्राप्ति के लिये पिछा से बढ़ कर सिकारिज की जरूरत है। पिता के मित्र नन्हेंसिंह से जब मैं मिला तब उन्होंने दुःख प्रकाश करते हुए कहा कि मैं इस वर्ष अपने भतीजे की सिकारिज कर चुका हूँ और परिणाम से अधिक सिकारिज करके मैं अपने हाकिम का दिमाग अधिक भोजन से भेदे की तरह बिगाड़ना नहीं चाहता।

इसको सरल हिन्दी में लिखो—

उत्तर—प्रयाग विश्व विद्यालय के अंदर प्रेजुपट के लिये दो ही मार्ग हैं। एक तो वकालत या डाक्टरों पास करें दूसरे नायब तहसीलदारी या सब रजिस्ट्रारी की नौकरी मिल जाय। डाक्टरों या वकालत पढ़ने में समय और धन दोनों का आवश्यकता है, नायब तहसीलदारी या सब रजिस्ट्रार के लिए काफ़ी सिकारिज की जरूरत पड़ती है। मैं अपने पिता के मित्र नन्हेंसिंह से मिला उन्होंने कहा कि इस वर्ष मैं अपने भतीजे का नौकरा के लिये सिकारिज कर चुका हूँ। अब मैं अधिक सिकारिज नहीं कर सकूँगा क्योंकि उसे अधिक भोजन से अनुप का भेदा

कठिन है। अतः द्रव्योपार्जन के लिए कहानी लेखक बनना सिद्धीय है।

२ प्रश्न—मेरे मकान के पास एक डाक्टर रहते थे। वे पुराने हो गये थे। हम लिये अपनी जग लगी विद्या की लुरी गरीबों को गदन पर नेत्र किया करते थे। उन्होंने मुझ से एक दिन पुछा—विश्व वाचू देखता है, अ। तुम्हारा स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। रोज घूमने से तुम्हारा शरीर खूब पुष्ट हो गया है। फिर वे बड़ी निराशा भरी दृष्टि से मुझे देखने लगे। माना अज्ञात रोगों से—इतना सस्ता उनके हाथ से निकल गया। मैं यदि कहानी लिखने की तैयारी न करना होता तो उस बूढ़े डाक्टर को कोटर-लान-आखिं का दौड़ कर उसका दिल तक की खबर न जाता। उसका धन्यवाद करके मेने मत में कहा—उत्तर जा, आज तो हा ऊपर अपने खाने में एक मोट जईया, यदि कमी सुन लेगा तो फिर पाँट डालेगा।

इसको मरल दिव्दी में लिखा।

उत्तर—मेरे मकान के सामने ही एक डाक्टर रहता था। वह बूढ़ा हो गया था। फिर भी वह अपनी डाक्टरी द्वारा गरीबों को अट मँट दया देकर धैर्ये सुसा करता था। एक दिन उसने मुझ से पुछा—क्या विश्व वाचू 'आज कल तो आपका स्वास्थ्य ठीक रहता है प्रति दिन घूमने से तुम तगड़े हो गये हो। फिर निराश हो कर मेरी ओर देखने लगा। मानवम पहना था कि वे पुराना रोगों उसके हाथ से शाइ ही दाम न चुटकाया था गया। उस समय में कहानी लेखक बनने का मन न था। इस लिये उस बूढ़े डाक्टर के निनवन से न उसके दिल का खान नाइ

गया। मैंने उसे धन्यवाद दिया और अपने मन में कहा कि आज इसी डाक्टर के ऊपर इसकी कर्तूत को नोटयुक्त में लिखूंगा। और फिर ऐसा निबन्ध लिखूंगा कि जय कभी यह सुनेगा सिर पीट के रह जायगा।

३ प्रश्न—प्रयाग विश्व विद्यालय के अंदर प्रेजुपट के जिप डाक्टरों या घकालत के सट्टन समय और धन तापेत्त व्यवसायों के सिवा नौकरी में नायबतहसीलदारी या सब रजिस्ट्रारी के पद ही अधिक आकर्षण रखते हैं, पर उनकी प्राप्ति के लिये पिछा से बढ़ कर सिफारिश की जरूरत है। पिता के मित्र नरहेसिंह से जब मैं मिला तब उन्होंने दुःख प्रकान करते हुए कहा कि मैं इस वर्ष अपने भतीजे की सिफारिश कर चुका हूँ और परिणाम से अधिक सिफारिश करके मैं अपने हाकिम का दिमाग अधिक भाजन से मेदे की तरह बिगाड़ना नहीं चाहता।

इसको सरल हिन्दी में लिखो—

उत्तर—प्रयाग विश्व विद्यालय के अंदर प्रेजुपट के लिये दो ही मार्ग हैं। एक तो घकालत या डाक्टरों पास करें दूसरे नायब तहसीलदारी या सब रजिस्ट्रारी की नौकरी मिल जाय। डाक्टरों या घकालत पढ़ने में समय और धन दोनों का आवश्यकता है। नायब तहसीलदारी या सब रजिस्ट्रार, जिप काफी सिफारिश की जरूरत पड़ती है। मैं अपने पिता के मित्र नरहेसिंह से मिला उन्होंने कहा कि इस वर्ष मैं अपने भतीजे का नौकरी के लिये सिफारिश कर चुका हूँ। अब मैं अधिक सिफारिश नहीं कर सकता। क्योंकि उसे अधिक भाजन से मनुष्य का मेदा



( २३ )

उपकारी ) दूसरे को भलाई करने वाला । विस्मरणीय—सदा याद रहने योग्य । इतिधो—अन्त ।

( पृष्ठ—३० )

सर्व—सब जगह । विचरता है—घूमता है । सर्वेश्वर—(सर्व—ईश्वर ) सब का मालिक । सर्व व्यापक—सब में रहने वाला । उपस्थित—मौजूद ।

रंक—गरीब । संकोच—लज्जा । मानहानि—अपमान । गर्व—घमंड । घंधा—रोजगार । निर्धन—गरीब । भाड़े—किराया ।

दृष्टान्त—उदाहरण ।

( पृष्ठ—३१ )

बत्ता—बालने वाले, लोकवर देने वाला । वस्तुता—व्याख्यान । पंडिताई—विद्वता । ग्लानि—दुःख । जी में जी आना—शान्ति मिलना । हुरामरा—प्रसन्न ।

( पृष्ठ—३२ )

वस्तुता झाड़ने—व्याख्यान देने । पुराणकार—पुराण बनाने वाले । कर्मवाद—कर्म की प्रधानता मानने वाला सिद्धान्त । पुनर्जन्मवाद—आत्मगमन के सिद्धान्त । पाश्चात्य—यूरोपीय । भौतर के फटे पुराने और मैले चियड़े—अज्ञानता । समालोचक—किसी वस्तु का गुण अथगुण को बताने वाला, विवेचक । मन-मुटाव—द्वेष । दाँव—मौका ।

( पृष्ठ—३३ )

पौ बारह—रंग जमजाना । अयोग्यता—मूर्खता । भासने—ज्ञानने युक्ति—उपाय । सुक्ती—दीख पड़ती । भाव प्रकाश—विचार प्रकट । जुगती—मिलती । अधूरा—अपूर्ण । माहमा—बड़ाई, महत्त्व





एकबारगी पट गया और उत्साह का सूर्य फिर निकल आया ।

क) इनको सरल हिन्दी में लिखो ।

उत्तर—उनके गुह पर एनीने की दो चार बूँदें झलकने लगीं ।  
 उन्ने कमल सूर्य के किरण में घिल उठता है और पाला  
 एनीने से मुक्तो जाना है जैसे ही पड़ने उनका मुख  
 उत्साह ने खिल उठा था पर यह सोच कि अब क्या  
 कई चिन्ता और दुःख में फिर मुक्तो गया । उनकी  
 यह दगा देख मेरे हृदय में दया आ गयी । उस समय  
 मैं बिना दुनये ही उनकी सहायता के लिये जा  
 पहुँचा । मैंने धीरे से उनके कानों में कहा—नहा-  
 गय ! चिन्ता का कोई बात नहीं मैं आपकी सहायता  
 के लिए तैयार हूँ । आप जो चाहें वह कह डालें, मैं  
 कान बना लूँगा । मेरे दाइस बन्धाने पर धला जी के  
 मन में शान्ति आयी । उनका मन पूर्वत् प्रसन्न हो गया,  
 छोड़े मनय के लिए जैसे आकाश में बादल घिर आता  
 है और वायु के झोके से दूर हो जाता है, जैसे ही उनके  
 मुखपर डल की चिन्ता मेरे दाइस बन्धाने से दूर हो  
 गयी उनके मन में उत्साह पैदा हो गया ।

( ख ) कपिल के विषय में क्या जानते हो ?

उत्तर—कपिल एक मुनि हो गये हैं, ये कर्दम प्रजापति के औरस्त  
 और देवमर्ता के गन में उत्पन्न हुए थे । ये भगवान् के  
 गान व अध्यास माने जान हैं । इन्होंने सांख्यदर्शन का  
 रचना की है इन्होंने ही नगर के साठहजार पुत्रों को  
 भगवान् 'कथ' था ।



एकबारगी फट गया और उन्साह का सूर्य फिर निकल आया ।

( क ) इसके सरल हिन्दी में लिखो ।

उत्तर—उनके गुँह पर पत्थरों की दो चार घूँदें झलकने लगीं । जैसे कमल सूर्य के किरण में गिल उठता है और पाला पड़ने से मुक्ता जाता है वैसे ही पहले उनका मुख उन्साह में खिल उठा था पर यह सोच कि अब क्या कहूँ चिन्ता और दुःख से फिर मुक्ता गया । उनकी यह दगा देख मेरे हृदय में दया आ गयी । उस समय मैं बिना चुलाये ही उनकी सहायता के लिये जा पहुँचा । मैंने धीरे से उनके कानों में कहा—महा-शय ! चिन्ता की कोई बात नहीं मैं आपकी सहायता के लिए तैयार हूँ । आप जो चाहें वह कह डालें, मैं काम बना लूँगा । मेरे ढाढ़स बन्धाने पर घला जी के मन में शान्ति आयी । उनका मन पूर्वत् प्रसन्न हो गया, थोड़े समय के लिए जैसे आकाश में बादल घिर आता है और वायु के झोके से दूर हो जाता है, वैसे ही उनके मुखमण्डल की चिन्ता मेरे ढाढ़स बन्धाने से दूर हो गयी उनके मन में उन्साह पैदा हो गया ।

( ख ) कपिल के विषय में क्या जानते हो ?

उत्तर—कपिल एक मुनि हो गये हैं, ये कर्दम प्रजापति के औरस्त और देवप्रती के गमन में उन्पन्न हुए थे । ये भगवान् के पान्थ अवतार माने जाते हैं । इन्होंने सांख्यदर्शन की रचना की है । इन्होंने ही सगर के मातृहजार पुत्रों को भस्म किया था ।



एकबारगी पट गया और उन्साह का सूर्य फिर निकल आया ।

( क ) इसको सरल हिन्दी में लिखो ।

उत्तर—उनके मुँह पर एगोने की दो चार घूँदें झलकने लगीं । जैसे कमल सूर्य के किरण में गिरल उठता है और पाला पड़ने से मुक्ता जाता है वैसे ही पढ़ते उनका मुख उन्साह ने खिज उठा था पर यह सोच कि अब क्या कहूँ चिन्ता और दुःख से फिर मुक्ता गया । उनकी यह दृष्टि देख मेरे हृदय में दया आ गयी । उस समय मैं बिना युक्ताये ही उनकी सहायता के लिये जा पहुँचा । मैंने धीरे से उनके कानों में कहा—महा-शय ! चिन्ता की दोई बात नहीं मैं आपकी सहायता के लिए तैयार हूँ । आप जो चाहें वह कह डालें, मैं काम बना लूँगा । मेरे ढाढ़स बन्धाने पर घटा जी के मन में शान्ति आयी । उनका मन पूर्वत् प्रसन्न हो गया, थोड़े समय के लिए जैसे आकाश में बादल घिर आता है और पायु के झोके से दूर हो जाता है, वैसे ही उनके मुखमण्डल की चिन्ता मेरे ढाढ़स बन्धाने से दूर हो गयी उनके मन में उन्साह पैदा हो गया ।

( ख ) कपिल के विषय में क्या जानते हो ?

उत्तर—कपिल एक मुनि हो गये हैं, ये कर्दम प्रजापति के औरस्त और देवमती के गर्भ से उत्पन्न हुए थे । ये भगवान् के पाँचवें अवतार माने जाते हैं । इन्होंने सांख्यदर्शन की रचना की है । इन्होंने ही सगर के साठहजार पुत्रों को भस्म किया था ।



गौरव—महत्व । संजीदगी—जोशीला । राम रमौषल—मनमाना ।  
दस्तान—किस्ता कहानी ।

( पृष्ठ—३८ )

घोड़ा छुट जाना—आरंभ हो जाना । अनुमोदन—समर्थन ।  
मुख्य प्रकरण—खास विषय । जीम के आगे नाचा करेंगे—घूर्णन  
किया करेंगे । हम चुनी दोगे नेस्त—जो कुछ है हमी है । हम-  
सहेलियों—हमजोलियों । गिल्ल गिकषा—नौदा । राम रसरा—  
राम कहानी । गाँठें—करेंगे । शैतानी—बदनाशी । कयोपकयन  
—( कथा + उपकयन ) बातचीत ।

( पृष्ठ—४६ )

प्रेमालाप —( प्रेम + आलाप ) प्रेम की बात । बतकही—बात-  
चीत । विषई—मध्यस्थ । काव्यकला-प्रवीण—काव्य विद्या में  
निपुण । विद्वन्मण्डली—( विद्वत् + मण्डली ) विद्वानों का समाज ।  
सुहृद्गोष्ठी—मित्र मण्डली । क्रम—तिलतिला । रसाभास—मधु-  
रता का भाव । बरकते—अक्रम, ये तिलतिला । आधुनिक—नये ।  
शुष्क—कोरे ।

( पृष्ठ—४० )

शास्त्रार्थ—वाद विवाद । सरल—मधुर । संघर्ष—टक्कर ।  
जोषिका—रांजी । सारगर्भित—तत्त्वपूर्ण, मतलब से भरा । दूरदेशी  
—पहले ही से सोचना । ह्वा करे—आवे । ह्वातार्थ—सरल ।

( पृष्ठ—४१ )

दिनजोई—आइरा । ब्रिट—कमी । प्रपंचात्मक—मूठ फूर से  
नर । दुर्द—अनहान । बसनि-तान—बाग । मनेयोग—मन के  
एक कान करन—देना । स्वच्छन्द—स्वतन्त्र । कावृ—  
धन ।





गौरव—महत्व । संजोदगी—जोशीला । राम रमौषल—मनमाना ।  
दस्तान—फिस्ता कहानी ।

( पृष्ठ—३८ )

घोड़ा छुट जाना—भारंभ हो जाना । अनुमोदन—समर्थन ।  
मुख्य प्रकरण—खास विषय । जीम कं आगे नाचा करेंगे—घर्षण  
किया करेंगे । हम चुनो दीगरे नेस्त—जो कुछ है हमी है । हम-  
सहेलियो—हमजोलियो । गिह गिकषा—नींदा । राम रसरा—  
राम कहानी । गांठेगे—करेंगे । जैतानी—बदमाशी । कयोपकयन  
—( कथा + उपकयन ) बातचीत ।

( पृष्ठ—४६ )

प्रेमालाप —( प्रेम + आलाप ) प्रेम की बात । बतकही—बात-  
चीत । विवधई—मध्यस्थ । काव्यकला-प्रयोख—काव्य विद्या में  
निपुण । विद्वन्मण्डली—( विद्वत् + मण्डली ) विद्वानों का समाज ।  
सुददगोष्टी—मिश्र मण्डली । क्रम—तिलतिला । रसाभास—मधु-  
रता का भाव । वरकत अक्रम, ये तिलतिला । आधुनिक—नये ।  
शुक्क—फेरे ।

( पृष्ठ—४० )

गाल्हाय—बाद विवाद । सरल—मधुर । संघर्ष—टक्कर ।  
जोविका राजा सारगभिन—नवपुत्र मनलज ने भरा । इरदेशी  
—एक देश में साबना । कृपा करे—आवे । कृताय—सकल ।

( पृष्ठ—४१ )

जोड—आकर । बटि—कमा । मयचा मक—मृद फूल से  
ना । इरद—अनहानी । बमनि-वान—बाग । मनायोग—मन के  
पक्ष के नि । कतरनी—केश । खल्लन्द—खल्लन्द । कावृ—  
वृत्त



गौरव—महत्त्व । संवेदगी—जोशोका । राम रनौषल—मनमाना ।  
दस्तान—कित्ता कहानी ।

( ५३—३८ )

घोड़ा छुट जाना—भारें हो जाना । अनुमोदन—तनयन ।  
मुख्य प्रकार—खास विषय । जौन के आगे नाचा करेंगे—दर्शन  
किया करेंगे । हम बुनी दोगे नेस्त—जो कुछ है हमी है । हम-  
सहेजियो—हमजोहियो । गिल्ल गिकवा—नींदा । राम रतरा—  
राम कहानी । गाँगे—करेंगे । गैलानो—बदनामी । कपोरकपन  
—( कपो + उपकपन ) बातचीत ।

( ५४—४९ )

प्रेमलाप—( प्रेम + आलाप ) प्रेम की बात । बतकहो—बात-  
चाँत । विद्वर्ष—मध्यस्थ । काव्यकला-प्रबोह—काव्य विद्या में  
निपुण । विद्वन्मरडलो—( विद्वत् + मरडलो ) विद्वानों का समाज ।  
सुदृढगोष्टी—निब मरडलो । कम—तिलतिला । रत्तानाल—मधु-  
रता का भाव । बरकते—अर्थ, वे तिलतिला । आधुनिक—नये ।  
शुक्ल—खेरे ।

( ५५—५० )

अन्वयार्थ—वाद विवाद । सल्ल—मधुर । संघर्ष—झगड़ ।  
जंघिका—गंभीरी । सारगमिर्—अचपल । मतलब से मर । दुखें—  
—पहचान में मोचना । कृपा करे—आवे । हुनार्य—महान ।

( ५६—५१ )

१. गेह—अदर । गेह—कमो । अदवाक—कुछ कुछ में  
२. गेह—अदर । अदवाक—कुछ कुछ में  
३. क. न. कवरन—कंवा । स्वच्छन्द—अच्छन्द । क. न.  
४.



जाय फिर पहरों खतम नहीं होती । वे पुरानी लकीर के पकीर बने रहने की मरिमा खूब गाते हैं । तथा आज कल के नये प्रकार के योग्य नपुंसकान की निकायन हो किया करते हैं । यही उनकी बातचीत का प्रधान विषय रहता है ।

२ प्रश्न—निरा लिखित पद्यों का अर्थ लिखो और अपने वाक्य में प्रयोग करो ।

करतलधनि, हमसुनी दिगरेनेस्त, पोदा छुट जाना ।  
अपने मुँह मिया मिट्ठ ।

अर्थ देखो शब्दाय में । प्रयोग—

वक्तावा की ऐसी बातें अत्यन्त कहनी पड़ती हैं जिससे उनका करतलधनि करे ।

एक हासिल जा अपनों खूब नागौरा घर रहे थे । वह गुन एक ने कहा—ये हासिल जी ठीक हैं, हम सुनी दिगरेनेस्त ।

इससे वक्तावा की पोदा छुट जाना है तो बौन फाक सकता है ।

अपने मुँह मिया मिट्ठ बनता वहाँ माय की बात रहा है ।

—एक परिहास पूर्ण हृदय

१९००

१९०० १९०० १९०० १९००

१९०० १९०० १९०० १९०० १९०० १९०० १९०० १९००

१९०० १९०० १९०० १९०० १९०० १९०० १९०० १९००



जाय फिर पहरों स्वतन्त्र नहीं होती । ये पुरानी लकीर के पत्थरीर होने लहने की महिमा खूब गाते हैं । तथा आज काल के सब प्रकार से योग्य नवजवान की शिक्षाएत ही बिना करते हैं । यहा उनको बातचीत का प्रधान विषय रहता है ।

२. प्रथम—जिस निमित्त पदों का अर्थ निर्या और अपने वाक्य में प्रयोग करो ।

करतल्लखनि, हमहुनी दिगरेनेहन, पोदा लुट जाना ।  
अपने मुँह निपा सिद्ध ।

अर्थ होगा जगनाथ से । प्रयोग  
बहाली का ऐसी बाने अफसद बहनी पानी है  
जिससे उनका करतल्लखनि बने ।

एक हाकिम उः अपनी लूट लारीका कर रहे थे ।  
एह हुन एब ने बहा—ये हाकिम उी हाक है हम हुनी  
दिगरेनेहन ।

पारक पदना का पोदा लुट जाना है ना बौने रोह  
मबना ।

हम हुनी दिगरेनेहन, पोदा लुट जाना है ना बौने रोह  
मबना ।

३. निमित्तान्न का प्रयोग

हम हुनी दिगरेनेहन, पोदा लुट जाना है ना बौने रोह  
मबना ।

हम हुनी दिगरेनेहन, पोदा लुट जाना है ना बौने रोह  
मबना ।





( ३१ )

यह सेखी और तीन कानें—यह डोंग और मूर्खता ।

( पृष्ठ—४४ )

संगीत—( तम् + गीत ) वाद्य सहित गान ।

( पृष्ठ—४५ )

बंदर आदि का स्वाद का जाने—मूर्ख गुली का कदर क्या जाने ।

गन्धार्य—हुर—डेर, धोका । कल—सुन्दर । धमार—राग विशेष । हरन—हरण । अनन—कानक्षेप । कहर—उत्पात ।

पद्याद्यं—पलामू रंगे फूलों हैं, मानों वन में अग्नि का ढेर लगा हो, कोयल मधुर कुहक कुहकेंगी, घैंसे हो ही सखि ! सब लाग धमार गायेंगे और प्रदीप उड़ावेंगे । हे विदेगिनीयों ! सावधान हो जाओ शरीर की संभालो, क्योंकि कानक्षेप जाग्र हो कानाग्नि में नष्ट होगा । धैर्य को नष्ट करना हुआ कानाग्नि की बढ़ाने वाला उत्पात नवाना हुआ वसंत आवेगा

( पृष्ठ ४५ )

कानक्षेप का अर्थ है—गुस्सिले का वन मानों—कहा अर्थात् कान क्षेप न करके शरीर का अक्षुब्धत्व—मार्ग निरखने की सावधानी का अर्थ है शरीर की संभाल—कथा युक्त

( पृष्ठ—४६ )

मूर्खत्व का अर्थ है—उठो वह जानकर न जाने जाय हो कोटि की उड़न करवा—राम काटने बुद्धिमान

मूर्खत्व का अर्थ है—मन धरन बधन है—बूढ़ा । वसन्तकाल का—सुखी



( ३१ )

यह सेखी और तीन कानें—यह डोंग और मूर्खता ।

( पृष्ठ—४१ )

संगीत—( तन् + गीत ) वाद्य सहित गान ।

( पृष्ठ—४१ )

बंदर आदि का स्वाद का जाने—मूर्ख गुली का कदर क्या जाने ।

गन्धार्प—हर—देर, धोका । कल—सुन्दर धनार—राग विशेष । हरन—हरण । कानन—कानदेव । कहर—उत्पान ।

पदार्प—पलान देने फूले हैं, मानों वन में अग्नि का डेर लगा हो कोयल मधुर कुहक मूहकेगी, बैसे हो है सखि ! सब लाग धनार गार्दगे और प्रवीर उड़ावेगी । हे विदेगिनियों ! सावधान हो जाओ, शरीर को संभालो, क्योंकि कानदेव शीघ्र ही कानाग्नि से तपावेगा । धैर्य को नष्ट करता हुआ कानाग्नि को बढ़ाने वाला उत्पान मचाता हुआ बलन आवेगा ।

( पृष्ठ ४५ )

लाल-पोंजे—कोधित । मुधिगिर का बड़ा भाई—कर अर्थात् कान । स्वर्ग—नाक पोंडे का अनुनास—मोड़ । लिखने की सानग्री—स्वाही । पान के नत्ताले—कटा हुआ ।

( पृष्ठ—४८ )

महादेव जो के तिर पर हैं—जय यह गाल पहादा जय जो कंठ के मदन करता—घात काटने, गुरपागाल ।

महादेव जो अंग में पोतते हैं—भस्म धरन बंधता है—भूँटा । बरनदाम का—दुनी

( ३२ )

( पृष्ठ—४६ )

सुँह आर्थे—बराबरी करें । उषकी—वदमासिन । आग्रह—  
विनय । चाँचर—राग विशेष ।

( पृष्ठ—५० )

मसान का पास—इमशान भूमि में रहना । जास जास दास  
सथ कड़े कड़े अंग—जासों जयान नौरानियाँ । फुरो—सत्य  
ईश्वरोपास—ईश्वर ने कहा है । पशुपतिनाथ—शिव जी  
कामाक्षा—देवी । रमते—भूमने फिरने वाले ।

( पृष्ठ—५१ )

सेम—जेव नाम । समुन्दर—समुद्र । इंदर—इन्द्र । जय्ये—  
यस, योनि विशेष । रष्य—राक्षस । जोगदा जोगी । पूर्णमास  
का चन्द्रमा—सुन्दर स्त्री । पृथो पर उतारा जाय—बुलारा  
जाय ।

( पृष्ठ—५२—५३ )

भावि विषाग—होने वाली लड़ाई । मृगद्वीना—द्विरन क  
यथा । पुंज—ढेर । सुन्दर रूप । काई—जैसे काई से गुड़ उ  
टक जाता है, वैसे ही गहने से सुन्दरता भी छिप जाती है । कुंर  
—पुंय विशेष । काम—कामदेव । परतंचा—धनुष की डोरी  
कमान—धनुष । मजोड—फल विशेष । आसक्त—धनुरक्त ।

( पृष्ठ—५४—५५ )

बल्लभ—स्वामी । अलभ्य लाभ—अज्ञाय धनु की प्राप्ति  
वेगाने—वगावे मरम्पनी की दूसरी दुनि—विचलना

मातृक—मातृक गालक अमृती । दिनमात—मृद । मपु  
—टिवा ।

पचार्य—तब को सुख देने बाजी संभ्या हो गयी। माणिक्य की छंगूटी के समान सूर्य को मानो टिबे में दिपा दिया। कमल जला आलस्य में नेत्रों के घंद करने से मुहापनी लग रही है, अर्थात् सुषोम्न देख बामल संकुचित होने लगे। कामदेव की धपार गाते हुए पतिगण अपने अपने वसेरे को खजे।

अभिनया—परदा।

### सारांश

रामनामध के उपलक्ष्य में राजा रानी को धपार देने गये। रानी ने भी राजा को धपार दी। इतने में बंदिनों ने भी राजा रानी को धपार दी। यह सुन राजा ने रानी से कहा—

प्यारी ! हम लोग तो आपस में धपार दे हो रहे थे, अब ये बंदीजन भी हम लोगों को धपार दे रहे हैं।

रानी ने कहा—महाराज ! बंदी पवन का उन्मा बर्तन बिजा है, यह सच हो है। राजा रानी में बातें हो हो रही थी कि विदूषक ने कहा—

घरे नार ! कौन मुझे भी पृथे में बड़ा भारी परिजन है। उध मैं प्रबल बना रहा था उस समय लगने महर्षे पर हो हो कर पोषिली जेब में हाथो मारी। मेरे सखुर उम्र भर रोपी होवे हो मेरे मेरे जिन्हे बाजा बहर मैंन बरबर है।

रानी का हार्दिक विमर्श। रानी—हमों में तो दुन्दुभा नाम लहर पारद पदा है। यह सब विदूषक विदूषक का जो हार्दिक विमर्श हम लोग। हम तो हमों ने कहा कि कुछ नाम का तो लहर

विदूषक ने कहा कि महाराज कह का लहर महाराज ने विदूषक का नाम का कहा। हम तो विदूषक नाम का लहर लहर हो



युधिष्ठिर का बड़ा भाई, स्वर्ग, पौंड्र की अनुप्रास, लिखने की सामग्री, पान के मसाले ।

उत्तर—(क) विचक्षण ने कहा—नराज मत हो, जरा अपने कां तो देखो तुम क्या हो । आप तो आप ही हो । पद लिखे कुछ नहीं और चले हो लाख की बातें करने, हम सब तो पद लिख कर मानों मूर्ख ही हैं ।

विदूषक ने कहा—यदि तुम बक बक किये ही जायगो तो तेरा दहिना बाया कान काट लेंगे ।

विचक्षण बोली—और यदि तुम भी टूट्टे किये हो जाओगे तो तुम्हारा नाक काट कर, मूँड़ मूँड़ दूँगी और तुम्हारे मुँह में कालिख पोत कर कत्था चूना की टीका लगा दूँगी ।

(ख) युधिष्ठिर का बड़ा भाई—कर्ण ( कान ) । स्वर्ग—नाक । पौंड्र की अनुप्रास—मौंड्र । लिखने की सामग्री—स्याही, कालिख । पान के मसाले—कत्था चूना ।

२ ( क ) प्रश्न—नीचे लिखित गद्य को सरल हिन्दी में लिखो, यह भी लिखो यह किसने और कब कहा है—

जंघ न तंघ, ज्ञान न ध्यान, न जोग न भोग, केवल गुरु का प्रसाद, पीने का मदिरा और खाने का मांस, नसान का घाम, लाख लाख दामी सब कड़े कड़े श्रंग सेधा में हाजिर रहे पीप मद्य भंग, मिच्छा का भोजन और नमड़े का विज्ञान। लंका पलंका सातो दीप नवा खड गवता ब्रह्मा विष्णु महेश पारंपरगम्बर जोगी जनी सना वीर मरावीर हनुमान रावन महिरावन आकाश पाताल जहाँ बाधुं नही रह जा कहूँ सो सो करें मेरी









निस्तहाय—( निः+सहाय विलग्न संधि ) अस्तमय । मूलपुरुष—  
आदि पुरुष । गोद—इन्हीं से गहलोत राजपूतों की उत्पत्ति मानी  
जाती है । कनर बांधी—तैयार हुए । कुलपुरोहित—( तत्पुरुष  
समास ) खान्दानी पुरोहित । जान होम कर—ज्ञान की परषा न  
कर । सत्यपरायण—सत्यनिष्ठ । दुर्ग—कीला । सम्पूर्ण—विल-  
कुल । निरापद—सुरक्षित । शिषोपासक—( शिष+उपासक गुण  
संधि ) शिष भक्त—शिष का पूजन करने वाला । ज्ञाति प्रिय—  
शान्त स्वभाष वाला ।

विचित्र विचित्र—अजीब अजीब । धंगल—धंगवाले । रचनाएँ कविताएँ । गारदीय—( गरन् + ईय ) गरद् श्चतु के । भूकनोत्सव—भूजा का उत्सव ।

( १५-४५ )

बाल चापल्य—बचपन की चपलता । भोली भाली—सीधी सादी । आनन्दमयी—आनन्द युक्त । शृङ्खलाबद्ध—एक कतार में । फेरी टो—परिष्कार का । मुरपान—आरम्भ ।

सामुद्रिक—हस्त रेखा दर्शने धान्ता । हलन्त—घदराहट ।  
गमनर—भेदिया ज मम

25-1-2

यान्त्रिकी में विद्युत् की शक्ति मापने वाले में। माघ  
धर्म - १००० वर्ष का शास्त्र—विद्या की गुण  
शक्ति मापने के लिए मापन करने का शास्त्र में एकमात्र—  
एक मात्र विद्युत् को मापने निम्नलिखित कारणों से विद्वान्  
मान्य

‘आशुजक’ - विपत्तयः प्रादुर्भाव इति । विपत्तिः कं भय  
मे प्रदत्तं भागं निजतः-जुन्यः । पृथक्पृथक्-द्वयं शब्दः ।



जल । शैब—शिव का । दंष्ट्रित—सोख देकर । उपाधि—  
खिताब ।

( पृष्ठ—६२ )

विश्वकर्मा—देवताओं के कारीगर । शूल—भाला । तूनीर—  
तरकस । असि—तलवार । चर्म—ढाल । उत्तमोत्तम—  
( उत्तम + उत्तम गुण संधि ) बढ़िया, बढ़िया । शस्त्रों—हथियारों ।  
अलंकृत—सुसज्जित । आदि देव—शिव । भूतनाथ—शिव ।  
दिव्यास्त्रों—वे अस्त्र जो मंत्र बल से चलाये जाते थे । पराक्रमी—  
सानर्थवान । स्वर्गारोहण—( स्वर्ग + आरोहण—गुण संधि ) स्वर्ग  
में जाने । अप्सरा-वाहिनी—( तत्पुरुष समास ) अप्सराओं से ले  
जाते हुए ॥ दीप्तिमय—प्रकाशयुक्त । निष्ठीवन—धूक, साँड़ी ।  
अवज्ञा—अज्ञा न मानना । स्नेहोपहार—( स्नेह + उपहार गुण  
संधि ) प्रेम भेंट । अवमानना—अपहेलना, अवज्ञा । अनेक—  
जो भेदा न जा सके, अकाट्य ।

( पृष्ठ—६३ )

घोड़े सौभाग्य का विषय नहीं था—घड़े सौभाग्य का बात थी ।  
अंतर्द्वित—गुप्त, तिरोहित ।

मूलमंत्र नाथने की प्रतिज्ञा को—यस्य प्राप्ति के लिये हृद  
मंकल्प हुए । भाग्य चमका—भाग्योदय हुआ । शान्तस्थान—रहने  
का जगह । उत्तेजित—उत्तमजित । शस्त्रों—शुभारा । पथ—मार्ग ।  
परिष्कृत नाम

( पृष्ठ—६४ )

अग्निमान्न—अग्नि + अन्न नष्ट नाथ अर्थात् । पदोचित  
—यथा—उचित । यथा—यथा—यथा—यथा—यथा—यथा—यथा—यथा—  
—राजपूताने में यह प्रथा थी कि महाराजे बांगे का जागीर दिया



जल । निष—निष का । दंष्ट्रित—सोख देकर । उपाधि—  
विताप ।

( पृष्ठ—६२ )

विश्वकर्मा—देवताओं के कारीगर । शूल—भाला । दूनीर  
—तरकम । अग्नि—तनधार । चर्म—छाल । उत्तमोत्तम—  
( उत्तम + उत्तम गुण संधि ) बड़िया, बड़िया । जखों—दुपियारों ।  
अलंघ्य—मुसल्लित । आदि देव—निष । भूतनाथ—निष ।  
दिप्यारखों—वे अख आ मंत्र पल से गलाये जाते थे । पराक्रमी—  
सामर्थवान । स्वर्गांगदण्ड—( स्वर्ग + आंगदण्ड—गुण संधि ) स्वर्ग  
में जाने । अप्सर-वाहित—( तपुण्ड्र समास ) अप्सराओं से ले  
जाते हुए ॥ दीप्तिमय—प्रकाशयुक्त । निष्पीवन—पूक, मंझो ।  
अधला—आला न मानना । स्नेहोपहार—( स्नेह + उपहार गुण  
संधि ) प्रेम भेंट । अवमानना—अवहेजना, अक्का । अभिषेक—  
आ भेंट न आ मंत्र, अक्काट ।

( पृष्ठ—६३ )

येदे सौभाग्य का विषय नहीं था—येदे सौभाग्य की बात थी ।  
अंतर्हित—गुप्त, निरोहित ।

मूलमंत्र साधने की प्रक्रिया की—यस्य अग्नि के लिये दूध  
मकल्ले हुए । भाग्य धनका—नागदण्ड हुआ । दानस्य—रहने  
को उगाह । उपोहित—उपहित । दाम्नी—दुधारा । एव—मार्ग ।  
परिपूर्ण—संपूर्ण

२४ ४

अ. २०२३ अग्नि + अक्षर एत मंत्र अंतर्हित अंतर्हित  
—१ एता - अंतर्हित एता एता मंत्र मंत्र मंत्र मंत्र  
- रात्रिपुत्र म एता एता एता मंत्र मंत्र मंत्र मंत्र





जल । जीव—जिब का । दीक्षित—सीख देकर । उपाधि—  
खिताब ।

( पृष्ठ—६२ )

विश्वकर्मा—देवताओं के कारीगर । गूल—भाजा । तूनीर—  
तरकस । अक्षि—तलपार । चर्म—टाल । उत्तमोत्तम—  
( उत्तम + उत्तम गुण संधि ) बढ़िया, बढ़िया । शस्त्रों—हथियारों ।  
अलंकृत—सुसज्जित । आदि देव—शिव । भूतनाथ—शिव ।  
दिव्यास्त्रों—वे अस्त्र जो मंत्र पल से चलाये जाते थे । पराक्रमी—  
सामर्थवान । स्वर्गारोहण—( स्वर्ग + आरोहण—गुण संधि ) स्वर्ग  
में जाने । अप्सरा-वाहित—( तत्पुरुष समास ) अप्सराओं से ले  
जाते हुए ॥ दीक्षित—प्रकाशयुक्त । निष्ठीषण—थक, सीढ़ी ।  
अवज्ञा—आज्ञा न मानना । स्नेहोपहार—( स्नेह + उपहार गुण  
संधि ) प्रेम भेंट । अवमानना—अपहेलना, अवज्ञा । अभेद्य—  
जो भेदा न जा सके, अकाट्य ।

( पृष्ठ—६३ )

घोड़े सौभाग्य का विषय नहीं था—घड़े सौभाग्य की बात थी ।  
अंतर्हित—गुप्त, निरोद्धित ।

मूलमंत्र साधने की प्रतिष्ठा की—राज्य प्राप्ति के लिये बृह  
नंकरूप हुए । भाग्य चमका—भाग्योद्भूत हुआ । वानस्यान—रहने  
की जगह । उद्योषित—उन्नतित । दोगरी—दुधारा । एष—मार्ग ।  
परिपूत—साक ।

( पृष्ठ—६४ )

अग्निगत—( अग्नि + आगत रूप संधि ) अतिरि । द्योतित  
( दया + उचित ) दया योग्य । मानंत—नरदार । मानंत-दया  
—राजपुत्राने में दया दया थी कि नहायजे पोरों के उत्तर दिशा



हैं, पर ईश्वर जिसका रक्तक होता है, उसे कोई मार नहीं सकता । जिस कमलावती ने इनके आदि पुरुष गोह की रक्षा की, उसी पंश के ब्राह्मण इसकी रक्षा के लिये तत्पर हुए । वे इसके कुल पुरोहित थे । वे सत्यनिष्ठ ब्राह्मण अपनी जान पर खेल कर इसे मंदार दुर्ग में ले गये । वहाँ एक यदुवंशी भील ने आश्रय दिया । पर वहाँ निरापद न समझ वे इसे लेकर पराशर वन में गये । वहाँ त्रिकूट पर्वत है, उसके नीचे नगौद ( नगौद ) गाँव में लेकर वे रहने लगे ।

बाप्पा के बचपन की बातें बड़ी विचित्र हैं । यह उन ब्राह्मणों की गाय चराया करता था । कहते हैं—नागौद के राजकुमारी शारदीय भूजनोत्सव में मूला मूलने के लिये अपनी सखियों के संग वन में गयी, पर उन लोगों के पास रस्ती नहीं थी । बाप्पा वहाँ गाय चरा रहा था । राजकुमारी ने इससे रस्ती माँगा । बाप्पा ने इस शर्त पर रस्ती दी कि राजकुमारी मेरे साथ सादी कर लें । उस समय खेल में बाप्पा का राजकुमारी के साथ विवाह भी हो गया । यहाँ से बाप्पा के भाग्योदय का सूत्रपात हुआ ।

जब राजकुमारी विवाहने योग्य हुई तब राजा ने उसके लिये एक योग्य घर ठीक किया । विवाह की तयारी होने लगी । पर पक्ष के एक सामुद्रिक ब्राह्मण ने राजकुमारी का हाथ देख कर कहा कि इसका विवाह हो गया है । यह सुन राजमहल में बड़ी हलचल मच गयी । विवाह किसने किया, कैसे हुआ, क्यों हुआ आदि बातें जानने के लिये गुप्तचर दूटे । बाप्पा को भी खबर लगी । इसने अपने भील माधियों को घात न फूटने पावे इसके लिए कसम धरायी । पर यह घात द्विपी नहीं रही । भेद खुल गया ।

बाप्पा ने विपदाशंका से पहाड़ के एक निर्जन स्थान में रहने लगा । बल्लोय और वेद नाम के दो भील कुमार ने इसका साथ न



है, पर ईश्वर जिसका रक्तक होता है, उसे कोई मार नहीं सकता। जिस कनकावती ने इनके आदि पुरुष गोह की रक्षा की, उसी वंश के ब्राह्मण इसकी रक्षा के लिये तैयार हुए। वे इसके कुल पुरोहित थे। वे सत्यनिष्ठ ब्राह्मण अपनी जान पर खेल कर इसे बँहारे दुर्ग में ले गये। वहाँ एक यदुवंशी भील ने प्राश्न दिया। पर वहाँ निरापद न समझ वे इसे लेकर पराशर वन में गये। वहाँ बिकूट पर्वत है, उसके नीचे नगौर ( नगौद ) गाँव में लेकर वे रहने लगे।

बाप्पा के बचपन की बातें बड़ी विचित्र हैं। यह उन ब्राह्मणों की गाय चराना करता था। कहते हैं—नगौद के राजकुमारी शारदीय नृजनोत्सव में नृजा नृजने के लिये अपनी सखियों के संग वन में गयी, पर उन लोगों के पास रस्ती नहीं थी। बाप्पा वहाँ गाय चरा रहा था। राजकुमारी ने इससे रस्ती माँगा। बाप्पा ने इस इर्त पर रस्ती दी कि राजकुमारी मेरे साथ सादी कर लें। उस समय खेज में बाप्पा का राजकुमारी के साथ विवाह भी हो गया। वहाँ से बाप्पा के नामोदय का सूत्रात हुआ।

उस राजकुमारी विवाहने योग्य हुई तब राजा ने उसके लिये एक योग्य घर ठीक किया। विवाह की तयारी होने लगी। घर पर के एक सामुद्रिक ब्राह्मण ने राजकुमारी का हाथ देख कर कहा कि इसका विवाह हो गया है। यह सुन राजबल में बड़ी हलचल मच गयी। विवाह कितने किया, कैसे हुआ, क्यों हुआ आदि बातें जानने के लिये गुप्तचर दूटे। बाप्पा की भी खबर लगी। इससे अपने भील भाषियों की बात न फूटने पावे इसके लिए कतन धन्य पर यह बात छिपी नहीं रही। भेद खुल गया।

बाप्पा ने विषय-शका से पहाड़ के एक निजन स्थान में रहने लगा। बलाय और वेद नाम के दो भोजन कुमार ने इसका साथ न



हारीश ने तब लोक जाने का विचार किया। जाने के दिन  
बाप का बेटा बड़े मन्त्रों हुआ। बाप का बेटा बड़े मन्त्रों हुआ।  
देखा कि हारीश एक दिव्य विमान पर स्वर्ग को जा रहे हैं। बाप  
को बाप देख हारीश ने उनका आशीर्वाद देने से जिसे यह शोक  
किया। बाप से कहा मेरे पास आओ। देखते देखते बाप का  
शरीर ब्रह्म रूप वह गया पर मुनि के पास तक पहुँच न सका।  
मुनि ने कहा मुँह खोलो। बाप ने मुँह खोला। मुनि ने उसके  
मुँह में सूँटा। पर बाप ने सूँटा से नहीं किया।  
अब वह पैर पर गिरा। यदि बाप मुँह में लेता तो अन्तर हो  
जाता, पर अन्तर तो न हुआ फिर भी उसका शरीर गहने में  
बने हो गया।

एक बार राजा होने के लिये हुए मरिच हुआ। वह अपने मन्त्रियों को लेकर गए दिन। राजा में होने का एक दोस्ताना लिये। उन्होंने राजा को दुखी बताया है। मैं पूछ कर इन मन्त्रियों के कारणों में राजा को यह बात था। इन मन्त्रियों को राजा लिये दो राजा हुए राजा करने हैं। वह अपने राजा लिये के राजा मन्त्रियों के राजा राजा। मन्त्रियों के लिये राजा राजा में अपने मन्त्रियों के राजा लिये। किन राजा में वह मन्त्रियों के राजा राजा, उन राजा में मन्त्रियों के राजा मन्त्रियों के राजा राजा राजा लिये। वह लिये के लिये राजा राजा राजा राजा राजा राजा राजा के लिये राजा राजा राजा

[illegible]









हारीश ने गिय लोका जाने का विचार किया । जाने के दिन बापू को बड़े सचेत हुआ था । बापू को गया हेर में बापू को देखा कि हारीश एक दिव्य विमान पर स्थान को जा रहे हैं । बापू को बापू देख हारीश ने उसका पानीबाँध देने से जिन्हे रद्द रोका दिया । बापू ने कहा मेरे पास बापू । देखते देखते बापू का शरीर बाँध हाथ रद्द गया पर मुनि के पास तक पहुँच न सका । मुनि ने कहा मुँह खोलो । बापू ने मुँह खोला । मुनि ने उससे मुँह में पूजा । पर बापू ने पूजा से नहीं लिया । बापू रद्द रद्द पर गिरा । यदि बापू मुँह में लेता तो बमर हो जाता, पर बमर तो न हुआ फिर भी उसका शरीर मरने से बचेप हो गया ।

एक बापू राज्य लेने से जिन्हे दूर मर्तिर हुआ । वह अपने मर्तिरों को लेकर गया हुआ । मर्तिरों में इसे बापू केरलवाप मिले । उभोंने बापू को दुखों का कारण हो । मर्तिर पूँच कर इस मर्तिर के मर्तिर से दर्शन भी बट जाया था । इस मर्तिर को पूजा इसके रंग रंगे हुए मर्तिर कर रहे हैं । यह अपने बापू विमान के राजा मर्तिर के रंगी बापू । मर्तिर ने लगे हुए बापू ने अपने मर्तिरों में इस किया । जिस राज से यह मर्तिर के रंगी बापू, इस दिन से मर्तिर के बापू मर्तिर का बापू रंग रंगे रंगे । इस मर्तिर ने लगे हुए बापू बापू का हा मर्तिर । और से लगे हुए बापू

एक बापू राज्य लेने से जिन्हे दूर मर्तिर हुआ । यह अपने मर्तिरों को लेकर गया हुआ । मर्तिरों में इसे बापू केरलवाप मिले । उभोंने बापू को दुखों का कारण हो । मर्तिर पूँच कर इस मर्तिर के मर्तिर से दर्शन भी बट जाया था । इस मर्तिर को पूजा इसके रंग रंगे हुए मर्तिर कर रहे हैं । यह अपने बापू विमान के राजा मर्तिर के रंगी बापू । मर्तिर ने लगे हुए बापू ने अपने मर्तिरों में इस किया । जिस राज से यह मर्तिर के रंगी बापू, इस दिन से मर्तिर के बापू मर्तिर का बापू रंग रंगे रंगे । इस मर्तिर ने लगे हुए बापू बापू का हा मर्तिर । और से लगे हुए बापू



हारीत ने शिव लोक जाने का विचार किया। जाने के दिन  
 व्या को बड़े सवरे बुलाया। बाप्या सौ गया देर में आया तो  
 वा कि हारीत एक दिव्य विमान पर स्वर्ग को जा रहे हैं। बाप्या  
 आया देख हारीत ने उसको आर्गोर्गद देने के लिये रथ रोक  
 दिया। बाप्या से कहा मेरे पास आओ। देखते देखते बाप्या का  
 रथ बीस हाथ बढ़ गया पर मुनि के पास तक पहुँच न सका।  
 नि ने कहा मुँह खोलो। बाप्या ने मुँह खोला। मुनि ने उसके  
 ह में धूँसा। पर बाप्या ने धूँसा से नहीं लिया।  
 तब वह पैर पर गिरा। यदि बाप्या मुँह में लेता तो अमर हो  
 जाता, पर अमर तो न हुआ फिर भी उसका शरीर शस्त्रों से  
 भिद्य हो गया।

अब बाप्या राज्य लेने के लिये दृढ़ प्रतिज्ञा हुआ। वह अपने  
 सन्निहियों को लेकर चल दिना। मार्ग में इसे राधा गोरखनाथ मिले।  
 उन्होंने बाप्या को दुधारी तलवार दी। मंत्र फूँक कर इस तलवार  
 से मारने से पर्वत मो कट जाता था। इस तलवार को पूजा इसके  
 गे वाले हर साल करते हैं। यह अपने मामा चिन्नार के राजा  
 मानसिंह के यहाँ आया। मानसिंह ने इसको बढ़े आदर से अपने  
 कमरों में रख लिया। जिस गंज से यह मानसिंह के यहाँ गया,  
 इस दिन से मानसिंह ने अन्य मामलों का कम ध्यान रखने लगे।  
 उन लोगों ने इसका मूल कारण बाप्या को ही समझा। और ये  
 इसके मनु हो गये।

एक बार किता विदेशों ने मानसिंह पर बढ़ाई की। मानसिंह  
 ने अपने मामला से लड़ने के लिये जाने को कहा। पर उन्होंने  
 आगीर के पद फूँक कर जान में इनकार कर दिया। बाप्या अपनी  
 सेना लेकर गया। और वहाँ की मार मगाया। उन्नी दहा में  
 यह गजनी गया। वहाँ के अन्ध राजा सज्जन की मार कर









से प्रसन्न हुए और उन्हें बहुत सी नीति-शिक्षा देने लगे । कुछ काल ऐसे ही बीता । मुनिवर धीरे धीरे ऐसे प्रसन्न हुए कि उन्होंने शैव मंत्र में दीक्षित करके अपने हाथ से बाप्पा के गले में जनेऊ पहना दिया और उन्हें "एक जिग के दीक्षान" की बड़ी भारी उपाधि दी । बाप्पा की अक-पट भालि और स्नेह पूर्वक निष पृष्ठा देख कर भगवती भवानी भी अत्यन्त प्रसन्न हुई । उन्हें आशीर्वाद देने के लिये वे स्वयं तिह पर चढ़ कर सामने आईं और उन्होंने अपने हाथ से विश्वकर्मा के बनाये हुए शूल, धनुष, तीर, दूर्बार, अस्ति, बर्न और बड़ी तलवार इत्यादि उत्तमोत्तम शस्त्रों से बाप्पा को अलङ्कृत किया । ऐसे आदि देव भगवान् भूतनाथ के मंत्र से दीक्षित और भगवती भवानी के दिये दिव्यास्त्रों से सुसज्जित होकर बाप्पा अत्यन्त पराक्रमी हो गये ।

उत्तर—बाप्पा का निरङ्कुल भालि देख कर नटारना हारीत हृदय से उन पर प्रसन्न हुए और उन्हें नीति की शिक्षा देने लगे । कुछ समय इसी तरह से बीत गया । कमला मुनि बाप्पा पर ऐसे प्रसन्न हुए कि उन्हें शिव जी को मंत्रोपदेश दिया । अपने हाथ से बाप्पा के गले में जनेऊ पहनाया । उन्हें एक जिग महादेव की उपाधि दी । बाप्पा की निरङ्कुल भालि तथा प्रसन्न पूर्वक निष जी का पृष्ठन देख कर भगवती भवानी भी उन पर प्रसन्न हुई । उन्होंने बाप्पा को आशीर्वाद देने के लिये तिह पर चढ़ कर आईं और अपने हाथ से विश्वकर्मा के बनाये हुए शूल, धनुष, तीर, दूर्बार, तलवार और बड़ी तलवार इत्यादि अस्त्रों से बाप्पा को सुसज्जित किया ।



से प्रसन्न हुए और उन्हें बहुत सी नीति-शिक्षा देने लगे । कुछ काल ऐसे ही बीता । तबसे धीरे धीरे ऐसे प्रसन्न हुए कि उन्होंने जीव मंत्र में दीक्षित करके अपने हाथ से बापा के गले में जनेऊ पहना दिया और उन्हें “एक लिंग के दीक्षान” की बड़ी भारी उपाधि दी । बापा की अक-पट भक्ति और स्नेह पूर्वक निवृत्ति पूजा देख कर भगवती भवानी भी अत्यन्त प्रसन्न हुईं । उन्हें आशीर्वाद देने के लिये वे स्वर्ण सिंहा पर चढ़ कर सामने आईं और उन्होंने अपने हाथ में दिग्बन्धनों के बनाये हुए शूल, धनुष, तीर, दूतार, अस्ति, चर्म और बड़ी तलवार इत्यादि उत्तमोत्तम शस्त्रों से बापा को अलङ्कृत किया । ऐसे आदि देव भगवान् भूनाय के मंत्र से दीक्षित और भगवती भवानी के दिये दिव्यास्त्रों से सुसज्जित होकर बापा अत्यन्त पराक्रमी हो गये ।

उत्तर—बापा की निरद्वय भक्ति देख कर भगवती हृदय से उन पर प्रसन्न हुए और उन्हें नीति की शिक्षा देने लगे । कुछ समय इसी तरह में बीत गया । अन्ततः तबसे बापा पर ऐसे प्रसन्न हुए कि उन्हें निवृत्ति भी दी गई मंत्रोद्देश दिया । अपने हाथ से बापा के गले में जनेऊ पहनाया । उन्हें एक लिंग महादेव की उपाधि दी । बापा की निरद्वय भक्ति तथा अन्त पूर्वक निवृत्ति भी का पूजन देख कर भगवती देवी भी उन पर प्रसन्न हुईं । उन्होंने बापा को आशीर्वाद देने के लिये स्वर्ण सिंहा पर चढ़ कर आईं और अपने हाथ में दिग्बन्धनों के बनाये हुए शूल, धनुष, तीर, दूतार, अस्ति, चर्म और बड़ी तलवार इत्यादि अस्त्रों से बापा को सुसज्जित किया ।



( ४५ )

( पृष्ठ—६८ )

हताश --( हत + आश—दीर्घ संधि ) निराश, नाउमेद । कार्य  
संपादन—( तत्पुरुष समास ) कार्य को पूरा करने । समता—  
शक्ति । अयोग्य—लायक नहीं । उदारता पृथक्—उदारता सहित ।  
माली—जीव । संवरण—एकत्रित ।

अस्तीम—वेहद । मस्तिष्क—दिमाग । केंद्र—मध्यस्थान ।  
संचलन—संचार । मानसिक—मन की । अचल—कमजोर ।

उत्साह वर्द्धक—उत्साह बढ़ाने वाली । विपर्यय—उलट  
फेर । परिणाम—फल । विपरीत—उलटा ।

रहस्य—भेद । रुचि—इच्छा । लाभकारी—फायदेमंद ।

( पृष्ठ—६९ )

उचित स्थान—उपयुक्त जगह । अनुकूल—सुभाषिक । उला-  
हना—किसी बात को गिला । निश्चित—नियत । अतिरिक्त—  
अलावा । आकृष्ट—खींच आना ।

एक सी—एक समान । आकार—शक्ल । भेद—फरक ।  
सिद्धांत—नियम । तिरोभाव—गुप्त, दूर ।

प्रवृत्त—नियुक्त । कल्पनार्थ—विचारें ।

( पृष्ठ—७० )

उठा करती हैं—पैदा होती हैं । परिणत—जाने, बदलने ।  
यथासाध्य—शक्तिभर । दैव—भाग्य । सर्वथा—पूरा रूप से । प्रवृत्ति  
झुकाव मन की लगन ।

पुष्टि—मजबूती । तशाब्दी—सौ वर्ष की शताब्दी होती है ।  
प्रवृत्ति—स्वभाव । विपरीत—विरुद्ध । फलप्रद—लाभदायक ।  
साधारणतः—मामूली तराई से । हानि कारक होता है । विद्वज्जन



प्रायश्चना । आधिष्ठातृ—अन्वेषण, खोज । निर्मातृ कौशल—कला-  
बानुषो । घनि—गन्ध । उक्ता—चाह । तत्कालिक—समया-  
नुकूल, उन्नी समय । सादृश्य—समानता । अंध विश्वास—नृणां  
धैर्यास ।

( पृष्ठ—५४—५१ )

महत्त्वपूर्ण—महता से भरा । लाभकारियों—ज्ञानदायक ।  
विकाश—प्रकाश । उपकार—भलाई । विचारार्थ—विचार-  
वान् । प्रस्तुत—प्रेषित । मार्मिक—आधुनिक । सत्यमत—सत्य  
प्रतिष्ठा । दृढ़ संकल्प—पक्का विचार । भगवत्परायण—ईश्वरा-  
नुरागो कर्मवीर—कार्य तत्पर ।

आधित—अश्लेषित । अनिवार्य—बे रोक । सहानुभूति—  
समवेदना । अनापस्त—बिना परिधन । अनुचित—परोचित ।  
रानि—दंग । परित—बदल ।

उन्नति प्राप्त—उन्नतिवान् । कल्याणकर—मंगलदायक ।  
प्रतिरोध—रुकावट । अन्युद्य—बढ़ती । ताक—हृष्टि । एक—  
प्रकट करने वाला । सिद्धि—पूर्वता । सहकारिता—एक दूसरे  
की सहायता । गोचरार्थ—चिन्तनार्थ । हृदय विदारक—हृदय को  
फाड़ने वाले । वेता—सावधान हो जाओ । दृष्टा—वर्ध । मानुषिक  
—मनुष्य की । संत—कर्मवीर, दुर्बल । दुर्गुण—दुरे गुण । दुर-  
लभ्य—दुरी हास्य

### मार्गश

अग्न करके काय न मरना मरना होता कहते हैं पर मर-  
ना । कम प्रकाश न होना । वह जिनका कार्य मनुष्य का मरना  
बहुत कम है । अथ वह जिनका कार्य है कि अनेक मनुष्य अधिक  
पान्धित अथ अज्ञान करके न करके न मरना वह जिनका । इनमें वे  
निर्गुण हैं । अथ क क म है । इनमें क वह जिनका लक्षण  
हि । ग । न । २ । ३ ।





प्रासाधना । आशिष्कार—प्रवेष्टुं, खोज । निर्माह कौशल—कला  
 जानुरी । घनि—घनद । उक्ता—वाह । तत्कालिक—तत्काल-  
 भूत, इसी समय । साहस्य—समानता । अंघ विशाल—नृप  
 विशाल ।

( ५५—५३—५२ )

महत्त्वपूर्ण—महत्ता से महत् । लाभकारियों—लाभदायक ।  
विकास—विकास । उपकार—मलाई । विचारजाल—विचार-  
जाल । प्रत्युत—एकत्रिंशत् । मांशतिष्ठ—मांशुतिक । सत्यमेव—सत्य  
प्रतिष्ठा । हृत् संकल्प—यथा विचार । नगवधपथ—विशेष-  
नगराणां कर्मपथ—कार्य पथ ।

आधिप—अद्वयनिष्ठ । अनिवार्य—वै रोक । महाबुद्धि—  
मनवेदना । अनापन्न—विना परिश्रम । मनुष्य—मर्त्यादि ।  
शक्ति—शून्य । परिश्रम—बुद्धि ।

उपनि गीत—उपनिषद् । कल्याणकर—मंगलदायक ।  
प्रतिषेध—रुकावट । अनुपपन्न—बढ़ती । तत्त्व—हृदि । स्वप्न—  
प्रकट करने योग्य । निधि—पूरण । महकप्रित्त—एक दुमरे  
को कहा जाता । गन्धनीय—विनयनीय । हृदय विदारक—हृदय को  
फाटने वाले वस्तु । मन्त्र—मन्त्रोक्त हो जाता । हृदय—हृदय । मन्त्रोक्त  
—मन्त्रोक्त का अर्थ—कल्याणकारी दुःख । दुःख—हृदय । दुःख  
—हृदय । हृदय ।

71-12

[illegible]







साराधना । आधिष्कार—अन्वेषण, खोज । निर्माण कौशल—कला  
गतुरी । ध्वनि—शब्द । उत्कंडा—चाह । तत्कालिक—समया-  
कूल, उसी समय । सादृश्य—समानता । अंध विश्वास—मूठा  
विश्वास ।

( पृष्ठ—७४—७५ )

महत्त्वपूर्ण—महता से भरा । लाभकारियों—लाभदायक ।  
वेकाश—प्रकाश । उपकार—भलाई । विचारशील—विचार-  
शाली । प्रस्तुत—एकत्रित । सांश्रितिक—आधुनिक । सत्यमत—सत्य  
मतिज्ञ । दृढ़ संकल्प—पक्का विचार । भगवत्परायण—ईश्वरा-  
पुराणो । कर्मधोर—कार्य तन्पर ।

आधित—अवलम्बित । अनिवार्य—वे रोक । सहानुभूति—  
समवेदना । अनायास—बिना परिश्रम । समुचित—यथोचित ।  
रोति—ढंग । परिणत—बदल ।

उन्नति-शील—उन्नतिवान् । कल्याणकर—मंगलदायक ।  
प्रतिरोध—रुकावट । अन्युदय—बढ़ती । ताक—दृष्टि । सूचक—  
प्रकट करने वाला । सिद्धि—पूर्णता । सहकारिता—एक दूसरे  
की सहायता । शोचनीय—चिन्तनीय । हृदय विदारक—हृदय को  
फाड़ने वाले । चेता—साधधान हो जाओ । वृथा—व्यर्थ । मानुषिक  
—मनुष्य की । जाल—कमजोर, दुबल । दुर्गुण—बुरे गुण । दुर-  
वस्था—बुरी हालत ।

### माराश

अपने अपने कार्यों में सना सफल होना चाहते हैं, पर सफलता किस प्रकार से हाता है यह जानने वाले मनुष्यों की संख्या बहुत कम है । प्रायः यह देखा जाता है कि अनेक मनुष्य अधिक परिश्रम और प्रयत्न करके भी कार्य में सफल नहीं होते, इससे वे निराश हो, भाग्य को कांस्त है । इससे क्या यह मान लेना उचित है—

दि० ग० सं० प्र०—४



कि यह अनिवार्य सहायता से मनुष्य अधिक लाभ उठा सके। इसके लिए मनुष्य का आपन में प्रेम होना चाहिये। यह प्रेमनाथ मनुष्य में तभी पैदा हो सकता है, जब मनुष्य यह समझ ले कि हम लोगों का कार्य दूसरे का सहायता देना नहीं चल सकता। जब यह बात निश्चय हो जायगा तब मनुष्य में प्रेम और समवेदना अवश्य ही उत्पन्न होगी। तब स्वभावतः एक मनुष्य दूसरे की सहायता पहुँचाने का प्रयत्न करने लगेगा। तभी महिषासुर विजय का उचित दंग से कार्य में लाया जा सकेगा।

( ग ) अनिवायं—अवाध्य । महाहनुनि—समवेदना । नस्तिनरः—दिनार । मनुजित—अपारोक्ष । परितः—कार्य रूप में स्थाना ।

उत्तर—जिस निमित्त आप जिस किस गल्लों में होते हैं और  
आपका मैं सब कुछ को क्या कहते हैं—

विद्यालयेभ्यः शिक्षणदातव्यं. यन्त्रकारिणः, विद्यमानस्य  
नष्टस्य ।

उत्तर - विज्ञान - एक विषय मात्र नहीं, बल्कि एक विज्ञान-विधि है।

मन्त्रः । यः सर्वं शक्तिं वा विन्दति ।  
विन्दति ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 श्रीकृष्णाय नमः ॥





मौद—पुष्ट । शब्द विन्यास—शब्द रचना । आक्षेपेतिर्या—  
( आक्षेप + उक्तिर्वा गुण संधि ) आक्षेप पूर्ण वातें । रसाली—रस  
भरी । धडा—भक्ति ।

( पृष्ठ—८४ )

नमालोचक—विषेचक । रसप्रता—व्याकुलता । प्रतीक्षा—  
इंतजार । उक्त—कथित । प्रारम्भिक—हुरु था ।

( ४ )

सोमा—रुद्र । तर्दीष्ट—( तर्ष + उष्ट गुण संधि ) तर्ष में  
ऊँचा । दैनिक—प्रति दिन । टिप्पणियाँ—पुष्ट नोट । उत्तीर्ण—  
पाय । सम्मुख भाग में—सामने वाले हिस्सा में ।

( पृष्ठ—८६ )

करीने—खिलखिलेदार । निहायन—बिलकुल । रकाबो—  
तस्तरों । मुखक—कमाने वाली । ध्यानापरिचय—ध्यान लगा कर,  
ध्यान मात्र । अनुग्रह—हृषा, दया ।

मिष्टा—सन्धता ।

( पृष्ठ—८७ )

अचक्षा—पुनरावृत्ति । सुसुख—अत्यन्त रसपूर्ण । अतिष्ठा—  
मात्र । एवेर—( एषा + एव गुण संधि ) पूर्ण ।

संश्रुति—संज्ञा करके का मत । प्रती—प्रतिष्ठा । रुद्र पदक  
हटा—दिन हटाए गए ।

अचक्षा—अत्यन्त रस में दिष्टा करके वाला जिव । रुद्र—पुष्ट,  
दिष्ट ।

८४ ११

अचक्षा—अत्यन्त रस में दिष्टा करके वाला जिव । रुद्र—पुष्ट,  
दिष्ट । अचक्षा—अत्यन्त रस में दिष्टा करके वाला जिव । रुद्र—पुष्ट,  
दिष्ट । अचक्षा—अत्यन्त रस में दिष्टा करके वाला जिव । रुद्र—पुष्ट,  
दिष्ट ।



मार्गः

बालपुर के ब्राह्म महाविद्यालय में बालक बालिकाएँ दोनों साथ  
साथ पढ़ते हैं। बालक बालिकाएँ का देश निर्माण है। उनमें स्थाय  
के संघ भी नहीं है। विषय सामग्री का लेख भी उनमें नहीं है। इस  
विद्यालय में नौम गुरुके और नौम लक्षिकाएँ पढ़ती हैं। सब को  
एक ही नाम के संतर ही है। वहीं में एक गुरुका गानानन्द है,  
एक पढ़ा ही नौम बुद्धि वाला गुरुका है। बालक गुरुके उसे कभी  
देखें नहीं देखता पर परोंका बात सुनने का दिन सबसे पहले सब  
उसी का नाम सुना करते हैं। गानानन्द और मोहिनो जो देवघर  
मोहिनो की बहनोंको देता है। दोनों एक ही कला में पढ़ते हैं।  
वे साथ साथ गुरुके उनके और करते भी है। अपनी कला में गाना-  
नन्द गुरुके और मोहिनो गुरुके द्वितीय गुरुका है। इस गुरुके  
निको अचानक इन सब का है। गानानन्द गुरुके साथ का लक्षिका  
है। यह गुरुके का बेटा और द्वितीयका जका पढ़ता है, उनके  
कपड़े गुरुके साथ पढ़ते हैं। गानानन्द के जका धुन गानानन्द है।  
गानानन्द में गुरुके है। अपनी धुन की बुद्धि गुरुके गुरुके  
मोहिनो गुरुके देता अपने गुरुके गुरुके गुरुके का मुख मोहिनो गुरुके  
गुरुके देता करते हैं।

अपना निरन्तरिधायन के अतिरिक्त परीक्षा के काम का सम्बन्ध हो रहा है। कामकाज में गृह्ये काम कुछ करने करने का करने को है, जो उदा है वह उदा परीक्षा कर के परीक्षा कर रहा है। गंगा-बन्ध और अतिरिक्त के का परीक्षा को है, वह परीक्षा कर करने के लिए हम अपने म में बिना के कर में जो सम्बन्ध नहीं है। गंगा-बन्ध के उदा गंगा का अतिरिक्त के करने पर करने है, जो गंगा-बन्ध का अतिरिक्त गंगा करने का काम बिना करने है, गंगा-बन्ध



हैं जो जल तथा वायु के अणुओं में रहते हैं। और जहाँ  
जहाँ वे मिल जाते हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 श्रीकृष्णाय नमः ॥  
 श्रीगुरुभ्यो नमः ॥  
 श्रीपूज्याय नमः ॥

रामानन्द ने यह खोजा—कहाँ लिखा था, कुछ दिनों  
 बीतते ही मैंने भी कहा कि रामानन्द का यह कहना ठीक  
 नहीं है। मैंने कहा कि रामानन्द ने यह लिखा है कि  
 मैं ही लिखा हूँ। फिर भी रामानन्द को यह बखिखने की  
 जरूरत है कि लिखा है। मुझे पता है कि यह रामानन्द का  
 कहना है।

[illegible]

इस कला के बार-बार बार समझने में लगे रह प्रयत्न करो  
 मैं पता लगा। इसके लगे रह पता करते हैं ज्ञान वरकार के  
 निमित्त तब तो लगे लगे करने के लिये इसे बड़ा कुरीत हो। बरत  
 में लगे लगे करने के लिये नियमन करने में।

[illegible]



लेख बनकर वैद्यपती में बनर के नाम से प्रकाशित होने लगे। इससे वैद्यपती के हवारा नये प्राहक हो गये। इनके लेख सब लोग वाच से पढ़ने लगे। जिन विषयों का विचार हिन्दी पाठकों को न था वही शास्त्रीय विषयों पर विस्तृत लेख पढ़कर हिन्दी द्वित्वीय बनर की परिहर्ता, योग्यता, सार गतिता तथा लेखन वाचुर्य पर मेहित हो गये।

(३) नीचे लिखे शब्द जिन शब्दों से बने हैं, इन में से का व्याकरण में क्या कहते हैं?

मनोमोहक, सारपूर्व, सुवर्णमूल्य, महाकप।

मनत् + मोहक (संधि)

सार + पूर्व, सुवर्ण + मूल्य, तत्पुरुष समास।

महात् + कप — कर्मधारय समास।

## ६६—कवित्व

शब्दार्थ—शब्द—कविता। नन्दनन्द—स्वर्ग के एक नन्द का नाम। पारिजात—एक स्वर्ग वृक्ष का नाम। अश्विमेध—यज्ञ। मलयपानिज (मलय—एक पर्वत का नाम + पानिज—पानी) मलयपानिज पर्वत की हवा, मलय में सुगंध वसु। दिग्गज—(दिग्—मरडल—मरडल संधि) दिग्गजमरडल। अश्विमेध—एक वृक्ष। समता—सरावरी।

बनार—बनारस समता—सारे। मूल—मूल। तत्पुरुष—तत्पुरुष

( पृष्ठ—६४ )

एकमत्र—एकत्र मलि—सामान्य

० ० ० ० ०—१





लेख क्रमशः वैजयन्ती में नम्र के नाम से प्रकाशित होने लगे । इससे वैजयन्ती के हजारों नये ग्राहक हो गये । इनके लेख सब लोग चाब से पढ़ने लगे । जिन विषयों का विचार हिन्दी पाठकों को न था उन्हीं शास्त्रीय विषयों पर विस्तृत लेख पढ़कर हिन्दी हितैषी नम्र की परिउताई, योग्यता, सार गर्भिता तथा लेखन चातुर्य पर मोहित हो गये ।

(३) नीचे लिखे शब्द किन शब्दों से बने हैं, इस भेज का व्याकरण में क्या कहते हैं ?

मनोमोहक, सारपूर्ण, भुजंगभूषण, महाशय ।

मनस् + मोहक ( संधि )

सार + पूर्ण, भुजंग + भूषण, तत्पुरुष समास ।

महान् + भाग्य—कर्मधारय समास ।

## ११—कवित्व

शब्दार्थ—कवित्व—कविता । नन्दनन्दन—स्वर्ग से एक वन का नाम । पारिजात—एक स्वर्ग वृक्ष का नाम । अकिंचित्कर—तुच्छ । मलयानिल ( मलय—एक पर्वत का नाम + अनिल—हवा ) मलयाचल पर्वत की हवा, गीतल नन्द सुगंध वायु । दिङ्-मरडल—(दिक् + मरडल—व्यञ्जन संधि) दिङ्गामरडल । अरुणित—लाल हुआ । समता—धरावरी ।

अनादर—अपमान । समस्त—सारे । मूल—जड़ । लौर्ध्व—सुन्दरता ।

( पृष्ठ—६४ )

एकमात्र—केवल । गति—सामर्थ्य ।

दि० ग० स० ६०—६



विरह—विद्योग । भयानक—गुनरत्नाक । जयन—सोना ।  
 आनीप—( आन्मा + ईप ) संघर्षी । अपर्या—हालत ।

( पृष्ठ—६७ )

धुम्धन कर रही हैं—स्पर्श कर रही हैं । विरहो—विद्योगी ।  
 दुग्धदायी—दुग्ध देने वाला । दैवगन्दा—( दैव + इच्छा ) ईश्वर  
 की इच्छा । बानर—दोन । पलियों—श्रियों । विहार—मोड़ा ।  
 शनिक—मरा । संयोग—मिलन । शीतल—ठंडा । विरहातुर—  
 ( विरह + आतुर शीघ्र संधि ) विरह में आतुर । शोकसागर—  
 ( तपुस्व सनास ; शोक समुद्र । मौका—देखा, साका ।

दयार्द्र—( दया + आर्द्र शीघ्र संधि ) दयालु । कातरता—  
 आतुरता । अतिर—( अति + पर तपुस्व सनास ) अतियों में  
 घेष्ट । शोकसागर—( शोक + आतुर शीघ्र संधि ) दुःख में आतुर ।  
 शनिक—मरी । दैवदय—निराशा । विधज गया—दयार्द्र  
 हो गया ।

( पृष्ठ—६८ )

देग जुग दिया—मिलन करा दिया । तपुस्वत्त—( तपु +  
 उत्तरात्त—संयोग संधि ) इसके बाद । समागम—संयोग । उल्लुख  
 —उत्कीर्ण । नर्मवेदिन—हृदय में चुनौती । नर्मरत—मेट ।  
 मनोकाजना [ मनस् ( मनः ) + जानना विमर्श संधि ] मन की  
 बात । एतद्वय—एक एक, द्वावर्ग । भावनाली—भावनालु ।  
 मनेहमेनी—मुन्दर देना जाता । दग्धति—रही हुए । दग्ध-  
 स्थित—हालत ।

शोक का सागर—( शोक + सागर ) शोक का सागर ।  
 जो मुझे काय में लेलिख बोले व. उक्त का भाव होगा ।

विधज—( विध + ज ) विधज संधि । विधज—  
 विधज—( विध + ज ) विधज संधि । विधज—



विह—विदोष । भयानक—अनरनाक । भयन—सोना ।  
 आनीय—( आना + ईय ) संबन्धो । अवस्था—दाजत ।

( पृष्ठ—६७ )

पुष्पन कर रही है—स्वर्ग कर रही है । विरहो—विदोषो ।  
 दुग्धदायो—दुग्ध देने वाला । दैवेन्द्रा—( दैव + इन्द्रा ) इन्द्र  
 की इन्द्रा । कातर—दोन । पलियो—दियो । विहार—योद्धा ।  
 दनिक—जरा । संदोष—मिन्न । ग्रीवल—टंटा । विरहातुर—  
 ( विह + आतुर दीर्घ संधि ) विह से कातर । गोकासागर—  
 ( गतुम्भ समास ) गोका समुद्र । भाँसा—देखा, ताका ।

दयाद्र—( दया + आद्र दीर्घ संधि ) दयातु । कातरना—  
 आतुरना । कृपिदर—( कृपि + दर कतुम्भ समास ) कृपियो में  
 बैठ । गोकातुर—( गोका + आतुर—दीर्घ संधि ) दुग्ध से आतुर ।  
 मेविक—मेवी । बैराद्य—तिराया । पिपज गज—दयाद्र  
 से गजा ।

( पृष्ठ—६८ )

योग जुग दिया—निग्न करा दिया । मनुष्यान्—( मन् +  
 इत्यान्—संज्ञक संधि ) इनके बाद । समान—संदोष । दानुक  
 —उच्छिष्ट । सम्यक्पितृ—दत्त से पुत्रों । समर—मेट ।  
 मोषाकाया [ मन् ( मन् ) + काया विना संधि ] मन् की  
 याद । इन्द्रा—पुत्र, पुत्र, पुत्र । भाग्यशाली—भाग्यशाली ।  
 मनेतरसेनी—पुनर वेग दाता । दमनी—दो पुत्र । उन्-  
 मित्र—दुश्मिन् ।

मनेक का मनेक—है निग्न । दमनी के मन् मन् ।  
 के दूरे काय से मनेक मनेक से मनेक के मन् मन् ।

दिया—दित् + दित् + काय मनेक संधि । दित् दित्  
 में । भाग्यशाली—भाग्यशाली । भाग्यशाली—भाग्यशाली है मनेक ।



हुमोला—गोल होना । संमर्ग—मार्ग । रमणीय—स्त्रियों में  
प्रेम । अलौकिक—अपूर्य । गतिकम्पन—सामर्थ्यवान् । पुनः-  
पुनः—बार बार । फट—दुःख । मोचन—दूर ।

चित्रपिछा—चित्रकला । आजेख्य—जिपि, चित्रपट । प्रति-  
पातित—परवर्णित किया हुआ ।

### सारानि

संतार में यावत् वस्तु हैं, उनमें यदि कोई सर्वश्रेष्ठ सुन्दर  
वस्तु है तो कविता ही है । सुन्दर हो क्या है यह सुन्दरता को जड़  
है । सौंदर्य संतार में कविता ही सर्वश्रेष्ठ है ।

कविता का प्राथमिक कित सत्त्व में हुआ, देवताओं में हुआ  
या मनुष्यों में, यह बताना कठिन है; पर हाँ कविता का  
अनन्तता पालनोक्ति माने जाते हैं । इन्हीं के मूर्त ने पश्चात्क  
कविता निकाल पड़ी ।

कविता में कल्पना का होना आवश्यक है, कविता और  
कल्पना का घनिष्ठ सम्बन्ध है । जहाँ कल्पना है वहाँ कविता है ।

### प्रश्नोत्तर

१. प्रश्न—कविता की उत्पत्ति कहाँ है ?  
उत्तर—कविता की उत्पत्ति कहाँ है ? मनुष्यों के अलावा देव-  
ताओं में भी कुछ थाक गयीं । जो कहें हैं कि यह कि  
कविता एक बड़ा अज्ञातमयी, सर्वजन विदित अज्ञात  
रहस्य है । पृथ्वी में होने लक्ष्मी के हाथ में रहे रहे  
हुआ भोजन पदार्थ है । अनेक बार हमारा अंगुष्ठ अंगुष्ठ  
में पड़ा है । अन्न का अन्न ही अन्न अन्न लक्ष्मी है ।  
अनुचित संदिग्ध ने अन्न अन्न में रही निम्न विचार  
है कि कविता का अन्न अन्न कि अन्न अन्न अन्न अन्न  
कारणों में यह अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न





दुःखीला—शील होन । संसर्ग—साध । रमणीय—खियों में  
 भेट । अलौकिक—अपूर्य । शक्तिम्पन्न—सामर्थ्यवान् । पुनः-  
 पुनः—बार बार । कष्ट—दुःख । मोचन—दूर ।

विश्वविद्या—विश्वकला । आलेख्य—लिपि, चित्रपट । प्रति-  
 पालित—परवरण किया हुआ ।

### सारंश

संसार में यावन् वस्तु है, उनमें यदि कोई सर्वधेष्ट सुन्दर  
 वस्तु है तो कविता ही है । सुन्दर दा क्या है यह सुन्दरता की जड़  
 है । मोक्ष संसार में कविता ही सर्वधेष्ट है ।

कविता का आविर्भाव किस स्तर में हुआ, देवताओं में हुआ  
 या मनुजों में, यह बात कहना कठिन है । पर ही कविता का  
 जन्मदाता धार्मिक माने जाते हैं । इन्हीं के मुँह से प्रकाशक  
 कविता निकल पड़ी ।

कविता में कल्पना का होना आवश्यक है, कविता और  
 कल्पना का अनिष्ट सम्बन्ध है । जहाँ कल्पना है वहाँ कविता है ।

### प्रश्नोत्तर

१. प्रश्न—कविता की जन्मभूमि कहाँ है ? उत्तर—कविता प्रथम देव-  
 ताओं में हुई थी । लोक है स्वर्ग पर कि  
 कविता एक बड़ा प्रभावकारी, सर्वजन हिंदू स्वर्गों  
 का है । स्वर्ग में उसे शक्ति के साथ से रहे रहे  
 हुआ मिले रहे है । कविता के साथ ही लोक संसार  
 में रहा है । लोक का जन्म ही स्वर्ग का जन्म ही है ।  
 धार्मिक चरित्रों में कविता के साथ ही निरंतर बिना  
 है कि कविता के साथ ही निरंतर ही है । लोक का जन्म  
 का है ही वह ही स्वर्ग का जन्म ही है । लोक का जन्म



दुर्गोला—गोल होन । संतर्ग—साथ । रमणीरत्न—स्त्रियों में  
 ध्येष्ट । अलौकिक—अपूर्व । शक्तिरम्पन्न—सामर्थ्यवान् । पुनः-  
 पुनः—बार बार । कष्ट—दुःख । मोचन—दूर ।

चित्रविद्या—चित्रकला । आजेख्य—जिपि, चित्रपट । प्रति-  
 पालित—परवर्द्धि किया हुआ ।

### सारांश

संतार में यावत् वस्तु है, उनमें यदि कोई सर्वधेष्ट सुन्दर  
 वस्तु है तो कविता हो है । सुन्दर हां वश है यह सुन्दरता को जड़  
 है । सौंदर्य संतार में कवित्व ही सर्वधेष्ट है ।

कविता का आविर्भाव किस सन् में हुआ, देवलोक में हुआ  
 या मृत्युलोक में, यह बात कहना कठिन है; पर हां कविता का  
 जन्मदाता पालनोक्ति माने जाते हैं । इन्हीं के मुँह से एकाएक  
 कविता निकल पड़ी ।

कविता में कल्पना का होना आवश्यक है, कविता और  
 कल्पना का घनिष्ठ सम्बन्ध है । जहाँ कल्पना है वहाँ कविता है ।

### प्रश्नोत्तर

१. प्रश्न—कवित्व को जन्मभूमि कहाँ है ? मृत्युलोक अथवा देव-  
 लोक, सो कुछ ठाक नहीं । ठीक है केवल यह कि  
 कविता एक बड़ा प्रभावशाली, सर्वजन प्रिय चक्रवर्ती  
 राजा है । बचपन में उसे गर्वनों के हाथ से बड़े बड़े  
 दुःख भेजने पड़े हैं । अनेक बार उसका जीवन संकट  
 में पड़ा है । भाग का अभाव ही उसका प्रधान शत्रु है ।  
 आधुनिक परिदृष्टियों ने अनुसंधान से यही निश्चय किया  
 है कि कवित्व उस समय निःसहाय था । गर्व का दमन  
 करने में वह उस समय सफलान्वित नहीं हुआ । उस



यही विश्वास करके यह मिथ्या के साथ विवाह करने को उद्यत हुआ । इस पार कथित्व को विवाह करने के लिये उतनी उत्कण्ठा नहीं सहनी पड़ी ।

(क) इसका भावार्थ लिखो ।

(ख) निम्नलिखित शब्दों का विग्रह सहित समास बताओ—  
कुचेष्ट, सचेष्ट, महात्मा, जनसमाज, राजमहिषी, रमणी-  
रत्न, विरुतवेशी ।

उत्तर—(क) कल्पना को दूसरे शब्दों में मिथ्या कह सकते हैं ।  
यदि किसी बात की कल्पना की जाती है, तो यह बात  
मिथ्या समझी जाती है, पर कथित्व में कल्पना की हुई  
वस्तु मिथ्या नहीं समझी जाती । कल्पना के जितने  
दोष हैं, सब कथित्व में गुण हो समझे जाते हैं ।

कुचेष्ट—कु + चेष्ट—अव्ययी भाष समास ।

सचेष्ट—स + चेष्ट—अव्ययी भाष समास ।

महात्मा—महान् + आत्मा—कर्मधारय समास ।

जनसमाज—जन + समाज—तत्पुरुष समास ।

राजमहिषी—राजा + महिषी—तत्पुरुष समास ।

रमणीरत्न—रमणी + रत्न—तत्पुरुष समास ।

विरुतवेशी—विरुत + वेश + ई - तत्पुरुष समास ।

३ प्रश्न—निम्नलिखित शब्दों का उत्पत्ति तथा प्रत्यय बताओ ।

प्रेमिक, कातरता, प्रयत्न, आत्मीय ।

प्रेमिक—प्रेम + इक प्रत्यय लगाकर प्रेमिक बना है ।

कातरता—कातर + ता प्रत्यय लगाकर बना है ।

प्रयत्न—प्र उपसर्ग यत्न से लगा कर प्रयत्न बना है ।

आत्मा से ईय प्रत्यय लगाकर आत्मीय बना है ।

## १२—त्याग और उदारता

( पृष्ठ—१०२ )

शब्दार्थ—कष्ट भोगने—दुःख सहने । दृढ़ बने रहे—अपने षण पर दृढ़ रहे ।

सीमा प्रान्त—सरहद के भास पास । विपत्ति—दुःख । दुःख उठाये—दुःख मड़े । भाग्यहीन—( भाग्य + हीन तत्पुरुष समास ) अभाग । अद्वा—आश्चर्य सूचक अव्यय ।

जननी .. गरीबनी—माता और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बड़ी है ।

अन्नदाता—( अन्न का देने वाला तत्पुरुष समास ) प्रभु, पालन करने वाला ।

अथम—नोच । शत्रुओं के हाथ में छोड़ कर—शत्रुओं को सौंप कर । अज्ञानवास—( अ + ज्ञान + वास तत्पुरुष समास ) बिना जाने स्थान में रहने के जिये ।

( पृष्ठ—१०३ )

पृथोनाथ—( तत्पुरुष समास ) पृथ्वी का माजिक । यशो—सुमनसियों । परमेश्वर—( परम + ईश्वर गुण संबंधि ) परमा । श्री हृत्वर—महागुरु । नाटा मकं—जीन मकं । धर्मोपकार ( धर्म का उपकार तत्पुरुष समास गुण संबंधि ) उभ मूनि । कलकित—( कलक + कित ) दूषित ।

परा ( जल न ) जल नय । कोय—काई । अनाथर—अनाथर । मर नय । जल नय । उभ मूनि ।

परायण—परायण का माना अनाथ है । जहाँ अपना कोई नहीं है और जहाँ न उभ मूनि नाथ । यहाँ यहाँ उभ मूनि है ।

मन्दार्थ—दुरदिन—(कर्मधारय समास) घुरे दिन । दुरयज—  
दुराव जगह । जैये—जाय । जैयत—जाते हैं ।

पद्यार्थ—रहोम कहते हैं कि घुरे दिन में घुरे स्थान में चजा  
जाय, जैसे आग के लगने पर लाग घूर पर भाग जाते हैं ।

मन्दार्थ—रच्छो—रक्षा की । भार—बोझ । हलुकाय—  
हल्का हो ।

पद्यार्थ—जित्ती रत्ता इन्धानु ने लेकर अब तक के सूर्यवंशी  
राजा करते रहे, हा अधम प्रताप, आज तू उन्नी को त्याग रहा है ।  
जो प्राणों के समान प्यारी है आज उन्नी को तू तज रहा है । हे  
मेषाट्ट के मुख का सार ! कृपा कर मुझे समा करना । मैं सदा  
भार हो रहा । तुम्हारे कित्त काम आया ! मुझे विदा करो जिससे  
तुम्हारा दोस्त आज हल्का हो जाय ।

• ( पृष्ठ—१०४ )

नजल—( स + जल अव्ययी भाव समास ) भाँव से भरे ।

आध्वयदाता—( आध्वय + दाता तत्पुरुष समास ) शरण  
देने वाले ।

मंत्रिवर—( तत्पुरुष समास ) मंत्रियों में श्रेष्ठ । धोर-धोर—  
धोर और धोर द्वन्द्व समास । अधार—( अ + धार ) धोर रहित ।

मन्दार्थ—धारै—रखे । विमुख—विपरीत । धँवै—रहे । संवै—  
संबित करे । किरतग्न—कृतग्न जजन—गर्भिदा होता । अदत—  
रहते ।

पद्यार्थ—उत्त सेवक को धिक्कार है जो स्वामी का काम छोड़  
जीवन धारण करे । अर्थात् स्वामी के काय में प्राण न दे दे । उत्त  
जीवन को धिक्कार है जो जीवन को भजाई न समझे अर्थात्  
जीवन का लाभ फ्या है, यह न जाने । उत्त शरीर को धिक्कार है





नमः—दोहा—रागल । कपले—कपला । कलमो—  
कलम । कलम—मनः । कल—विनयत ।

व्याख्या—इस धर्म के लिये संसार पाप का दण्ड सिद्ध है।  
 जिसने जिस तरह अपना समस्त धर्म देव देता है, उसी दुष्टाचार को  
 देता है, उसी दुष्टाचार का दण्ड है। पाप देते ही देते ही सब लोग  
 पापियों को दुष्टाचार देते हैं। इसी कारण दुष्टाचार से संसार धर्म  
 ही धर्म नहीं हो पाया है। हे ब्रह्माणि भूत, संविद्येष्ट इत्येव भी  
 इस धर्म को देते हैं।

४२ अ०—१०५ अ० । अ०—४३ ।

( ८१-१०३ )

[illegible][illegible]

● 2017 年 1 月 1 日起

1. 凡在本行存款，利息按日计算，按月结息。  
 2. 凡在本行存款，利息按日计算，按月结息。  
 3. 凡在本行存款，利息按日计算，按月结息。  
 4. 凡在本行存款，利息按日计算，按月结息。  
 5. 凡在本行存款，利息按日计算，按月结息。



( ५५-१११ )

सुनिश्चित—संगीत मरु मराया हुआ । आजाकामय—अकाम  
११ । धोतीधर—यह धार में ।

मर्त्यवर्ग—मरणोत्तर राज्य, मोक्षदा ।

मन्त्र—भुवः स्वः । तं प्रोच्य—मन्त्र । पश्चिमो—पश्चिम ।

**रक्षण**—आमारे वधारी गांधी, गांधी, सिद्धपति लखि कुल  
ने निवेदित हुए हो तदनुरूपों वाते राणा प्रताप से आज भारत को  
सब सब कर रक्षना प्राप्ति पुरा बिदा । मेरे मनु-राजा गुण गुण  
**विजे** इस पर मत मत भक्त राज विजय है ।

श्री कर्माङ्ग — महादेव जो वासुदेवो से काराण्य देव है । हिरण्य  
 देवो — (अनुवृत्त) महादेव । हिरण्यदेवो से हिरण्य कहने का नाम । सोम  
 देव का नाम सोम । कर्माङ्ग — निर्माणाङ्ग । निर्माण स्वयं — पुत्र  
 देवो । हिरण्यदेव विद्या — योग्य । काराण्यदेव — काराण्य देव ।  
 वासुदेवदेवो — वासुदेव देवो

[illegible]

CP-4921

[illegible]

1.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$   $\frac{1}{4} \times \frac{1}{4} = \frac{1}{16}$   $\frac{1}{16} \times \frac{1}{16} = \frac{1}{256}$   $\frac{1}{256} \times \frac{1}{256} = \frac{1}{65536}$   
 2.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$   $\frac{1}{4} \times \frac{1}{4} = \frac{1}{16}$   $\frac{1}{16} \times \frac{1}{16} = \frac{1}{256}$   $\frac{1}{256} \times \frac{1}{256} = \frac{1}{65536}$

का सर्वतः कर आयता प्रण रण्य का हिन्दुओं की मयांश की कौन  
रक्षा करता ? इस प्रश्न सुमन्तमानों के इतिहास में हिन्दू नाम  
मिट जाता । हे प्रताप ! तुम्हारी कुग विना यह कर्तव्य कौन  
सेवता ?

निमित्त मात्र—कारण मात्र । दूगन्ध—तिनका के समान ।  
क्या क्या न किया—सब कुछ किया । म्पणाक्षर—मोने के अक्षरों  
संक्रिय रहेगा—तिनका रहेगा । चनक—राणा के पोंडे का नाम ।

( 79-113 )

कथं वा - इह न नमि । आर्त्तामि इत्यत्र ।

प्रदीपन - आश्रयदाता - विताम दिवना - पेश्यालो ।

( 79 - 224 )

शुद्धार्थ—कार्यार्थ इति वक्तुं । मायम् मायम् ।

पद्याय— जब तक मम । मे नाम है, तभी तक प्राण प्राण  
होता जब तक ज्ञान मे प्राण । तब तक प्रेम न जाई । जब तक  
धर्म रखता है तभी तक धर्म प्राण है । जब तक यज्ञ प्राण है  
तभी तक ज्ञान प्राण कहलाता है । अतः । महा प्रपन्न देव की  
महर्षि का निरादर करना इस सामाजिक मुख्य मुख्य के कारण  
कृत का नाम मे हमाता । अतः का यज्ञात्म मे करमा ।

संज्ञा - अत्र 'वि' इति अक्षरं 'वि' इति अक्षरं

वृत्तान्त - वसुधैव कुटुम्बकम् । आर्य समाज के अंगरेजों के प्रति दया के भावों का उदाहरण है ।

॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

॥ अथ श्रुतिः ॥ ( अथ श्रुतिः )



मेरी जो कुछ सम्पत्ति है, यह आपकी है, आप वापस लौट चले और सैन्य संग्रह कर युद्ध करें ।

पहले तो राणा ने इनकी सम्पत्ति लेने से इनकार किया। पुनः बहुत कुछ कहने पर ये वापस लौटे। भीलों ने भी राणा का साथ दिया। ये उदयपुर पर घावा बोल दिए। उसे अपने अधिकार में कर लिया।

महाराणा की वीरता पर अकबर भी मुग्ध था। खान खाना ने भी अकबर से महाराणा को शांति में रहने देने के लिये बहुत कुछ धिन्ती की। अकबर ने भी अथ राणा पर चढ़ाई पुनः नहीं की।

### प्रशंसा

१ प्रश्न—यह दिन सब दिन अलग रहे ।

सदा मिशर म्यनत्र विराज निज गौरवहि गदै ।  
 घर घर प्रेम गङ्गा गजे, काद कतेस यहै ।  
 बल, पौरव, उन्साद, मुद्रदना आरज पंश यहै ॥  
 वीर प्रमथिनी वीर भूमि यह वीरहि प्रमथ करै ।  
 इनके वीर काथ में परि अरि कायर कुर जरै ॥  
 राजा निज मरजाद न दास प्रजा न मर्ति मर्ज ।  
 परम पवित्र मुन्यः यह नामन सब दिन यही मने ॥  
 जब तौ अन्तर मुन्यः विराज नव नो मिथु गंभीर ।  
 नथ जग ह प्रनाथ नथ कारनि गार सब जग धोर ॥  
 हे कामायनी अनन्त ॥ परि निज नृप हृषा वसे ।  
 यह आरज मरजाद न दास प्रजा न मर्ति मर्ज ॥

( क ) उपरान्त पं ६ नाराज निन्दा न अन्तर निन्दा ।







- (२) जब तक गरीब में प्राण रहे तब तक धर्म न त्यागना चाहिये।
- (३) मनुष्य जब तक धर्म का रक्षा करता है, तब तक दण्ड पाता है।
- (४) जब तक रक्षति पाता है तभी तब, उन्म साधक काटा है।
- (५) हे पुत्र ! महा अपने दण्ड की मर्यादा का रक्षा करना। इस सांसारिक दुष्ट सुख के लिए दुष्ट में कलंक न लगाया।

### ६३-भानुप्रताप की कथा

( 57-11 )

[illegible][illegible]

Figure 1

*[Faint handwritten notes at the bottom of page 9]*

सुराज—सुन्दर राज्य । सहायता—सहानुभूति । अमीश—  
( आभि + इष्ट दीर्घ सधि ) रन्धित । गुप्त—द्विषा ।

परामर्श—सजाद । सविस्तर ( अव्ययी भाव समाप्त )  
विस्तर सहित ।

वर्णनबुद्धि—कथा के वर्णन का विस्तार । वाराह—सुभर ।  
मुदता—दीर्घता । वर्नने—जगती । सूकर—सुभर । विपुल—  
धनेक । कपटी—झुर्जा । श्रम—मेहनत ।

98-119

साधित—मजबूत । चार भाषा—भयकरता । गंभीरता—महानता । संकल्प करे—विचार करे ।

जगन्माय्य —( जगत् + माय्य अशुन मंथि ) मसार के मान-  
नीय । सिद्धान्तो—नियमा ।

दोहाय तुलसीदास जी कहते हैं कि जमा हानिद्वारा होता है, यैसी ही महायना मिलती है, भाष्य उसके पास नहीं आती किन्तु जहाँ जो घटना होने पाला जाता है वहाँ उसे ले जाती है।

आपदा—विपत्ति वरी राजा—एक नो जय, दूसरे सरी  
सीसरे राजा, कपट, कल में आपना काय साधना चाहता है।  
उपर्युक्त—( उपरी - उक्त यत्न मधि ) उपर कहा हुआ ।

मित्राणि—सौख्यमगः पुष्कालिक—पुद्गल समय का ।  
गौरव—वङ्ग्यन । श्वत्रिन मूर्चिन व्यक्त । म्यभावनः—स्वभाव  
से । श्वार्यभाव—मूर्तिभाव

77 412

महेश्वर—एक ही जगत् में ही अनेक प्रकार के प्राणियों का रहना । कम बाल्य  
समय में एक ही जगत् में ही अनेक प्रकार के प्राणियों का रहना ।









## प्रश्नोत्तर

! मन—राजा प्रतापमानु की कथा संक्षेप में लिखो ।

स्वर—देखो पाठ का सारांश ।

दे मन—कपटी ने स्वयं राजा के परामर्श का हस्तोलिप प्रबंध बांधा था कि उसी का पूरा दोष समझ पड़े । उसने समझा था कि साल भर में कभी न कभी विप्र मौस का हाजि खुल ही जायगा । उसके भाग्यवश ऐसा पहले ही दिन हो गया । राजा ने शूकर का पीछा करने में धैर्य दिखा लाया था, परन्तु झाकाश घाण्टी सुन कर मुक्ति शून्यता से गाप से प्रथम ही घबड़ा कर पद खुद भी न कह सका । वह शूरता के कार्यों में धैर्यवान था परन्तु बुद्धि में बालकों के समान अध्यान था । गापोस्वर के विषय में भी उसने घाण्टियों में खुद घिनती न की और उन्होंने भी प्रगट में तो उसे निर्दोष बट दिया । शिखु वास्तविक दुष्टिलता पर विचार कर गाप तोहलता बी खुद भी न घटाया ।

(क) उपरोक्त गद्य का मरज हिन्दी में लिखो ।

(ख) निम्नलिखित शब्द किस प्रकार का संज्ञा है और बने घने हैं ।

शून्यता, शूरता, धैर्यवान्, वास्तविक ।

उत्तर (क)—कपटी मुनि ने इस बात को निश्चय करने ही के लिए राजा को स्वयं परामर्श बी बट्टा था कि उसी का दोष प्रकट हो । उसने पद सोचा कि साल भर में कभी न कभी घाण्टी बी बट्टा जाय ही हो जायगा कि राजा ने हम लोगों बी घाण्टी का नाम लिखा है । कपटी



मुनि के आग्रह पर वह बात कहने दिन मृत गयी। मृग का पीछा करने में तो राजा ने घड़े की चोंच से बलि दिया, पर आकाश धाँधो होने पर वह एक बार ही घबड़ा उठा। और कुछ कह न सका कि अमजी बात क्या है। वह योगी के कामों में तो बराबर था, पर उसकी बुद्धि धाँधली के समान थी। शाप में कुछकाण पाने के लिए भी उसने आश्वला ने कुछ विनय नहीं किया। आश्वला ने प्रणम में तो उसे निर्दोष कह दिया, पर उसकी धमनी वृद्धित्व पर विचार कर उसके शाप में कुछ कमी नहीं की।

( १६ ) शूलता — शूल से तड़ित का ता प्रत्यक्ष लगाकर मातृ-वाचक मीठा बना है।

शूलता — शूल से ता प्रत्यक्ष लगाकर मातृवाचक मीठा बना है।

चैवपान् — चैव से चान् प्रत्यक्ष लगाकर गुणवाचक मीठा बना है।

वाचकविक — वाचक से एक प्रत्यक्ष लगाकर गुणवाचक मीठा बना है।

११. राजा की मर्तिप्रज्ञाता

राजा — राजा

१२. राजा

राजा — राजा

१३. राजा

१४. राजा

१५. राजा

१६. राजा

१७. राजा

१८. राजा

१९. राजा

२०. राजा — राजा

२१. राजा

२२. राजा

२३. राजा

२४. राजा

२५. राजा

२६. राजा

२७. राजा

( पृष्ठ—१२४ )

धेनूधन—( द्वन्द्व समास ) तड़क भड़क । धावणी—धावण  
 पूर्णिमा को धार्मिक कृत्व विरोध । रत्नावंधन—राखी बंधन ।  
 हल—नियानुसार । रामबाण ( तत्पुण्य समास ) श्रीरावन्द  
 के तौर । अत्याचारी—( अति + आचार + ई ) अन्यायी । वेधन  
 देकर, काट कर । राष्ट्रीयता—अपना राज्य । जन्माष्टमी  
 जन्म + अष्टमी—दीर्घसंधि ) भादों कृष्णपक्ष की आठवीं तिथि ।  
 मोक्षध—( जन्म + उत्सव ) जन्म का उद्घाटन । परतंत्रता—  
 अधीनता । सरिता—नदी । देश-ममता—देश प्रेम । मद—नशा ।  
 न—मनवाला । निष्प्राण—( निः + प्राण विसर्ग संधि ) जीव  
 न । ढांचा—खाका । आघात—चोट । नवया भलि—नव  
 वर की भलि दे हैं—धवर, जौतन, स्वरय, पाद सेवन, अर्पण,  
 न दास्य, साख्य और आत्मसमर्पण नौरतन की चटनी—मसल  
 लीना । तश्तुव—डाढ़, इपां । खुल—पैगम्बर । कलाम—  
 वल । मज्जीद—कोरान शरीक ।

( पृष्ठ—१२५ )

तरकीब—ढंग । आलमगार—औरङ्गजेब । पॉलिटिकल—  
 राजनैतिक । शुबह—संदेश । मज्दवी—धार्मिक । संत—फकीर ।  
 दृष्टि—( कु + दृष्टि—अव्ययी भाष समास ) पुरी निगाह । मुत्तो-  
 त—तकलोक । दिन काटे—दिन बिताये ।

सूफी—सुफि को परमात्मा मय मानने वाले अद्वैतवादी ।  
 नपरिनित—नावाकिक । अद्वैत—एकरवरवाद ।

( पृष्ठ—१२६ )

दोगिराज—दोगियों के राजा । रयस्यन—पुल्लूमि । अजर—  
 न मरने वाला । अजर—जो कभी बुढ़ा न हो । दंडे—हँसा । पर-

मुनि के भाग्यवश यह बात पहले दिन खुज गयी। सुष का पोछा करने में तो राजा ने बड़े ही धैर्य से काम लिया, पर आकाश वाणी सुन कर वह एक बार ही घबड़ा उठा। और कुछ कह न सका कि बसन्ती बात क्या है। वह योगता के कामों में तो बहादुर था, पर उसकी बुद्धि बालकों के समान थी। शाप में सुदृष्टा पाने के लिए भी उसने ब्राह्मणों से कुछ विनय नहीं किया। ब्राह्मणों ने प्रत्यक्ष में तो उसे निर्दोष कह पर उसकी बसन्ती कुटिलता पर विचार कर उसके में कुछ कमी नहीं की।

( ल ) शून्यता—शून्य से तद्धित का ता प्रत्यय लगाकर भाववाचक संज्ञा बना है।

शूरता—शूर से ता प्रत्यय लगाकर भाववाचक बना है।

धैर्यवान्—धैर्य में वान् प्रत्यय लगाकर गुणवाचक संज्ञा बना है।

वास्तविक—वास्तव में क प्रत्यय लगाकर गुणवाचक संज्ञा बना है।

## ११—मना की महिमागुता

मना—मन् नन् प्रत्यय लगाकर गुणवाचक संज्ञा बना है।

जगत्पिता—जगत् पितृ प्रत्यय लगाकर गुणवाचक संज्ञा बना है।

मना का महिमागुता—मना महिमागुता

( पृष्ठ—१२४ )

टैनधन—( इन्द्र समास ) तड़क भड़क । धावली—धावण  
 के पूर्वना के धार्मिक कृत्य विशेष । रत्नायंघन—राखी बंधन ।  
 कष्ट—नियानुसार । रानघाट ( तपुखंड समास ) घाटचन्द्र  
 के चौर । अन्याचारी—( अग्नि + आचार + ई ) अन्यायी । वेधन  
 —झेड़ कर, काट कर । राष्ट्रीयता—अपना राज्य । जन्माष्टमी  
 ( जन्म + अष्टमी—दीर्घसंधि ) भाद्र कृष्णपक्ष की आठवीं तिथि ।  
 जन्मोत्सव—( जन्म + उत्सव ) जन्म का उत्सव । परतंत्रता—  
 तार्थानता । सरिता—नदी । देश-भक्तता—देश प्रेम । मद—तगा ।  
 नल—नलबाला । निष्प्राय—( निः + प्राय विसर्ग संधि ) शेष  
 रहित । हाँवा—खाका । आघात—बाँट । नववा भक्ति—नव  
 वार की भक्ति ये हैं—धर्म, जीवन, स्वरूप, पाद भजन, अर्पण,  
 दिन दास्य, सास्य और आत्मसमर्पण औरतन की चरनी—मसल  
 गिनी । तम्रस्तुम्भ—झाड़, हरी । रसूल—पैगम्बर । कलान—  
 काल । मजिद—कोरान शरीर ।

( पृष्ठ—१२५ )

तरकीब—टंन । आलमगार—आरखूजेब । पोलिटिकल—  
 विनीतक । मुहद—संघ । मजदुरी—धार्मिक । संघ—राजीर ।  
 हटि—( कु + हटि + आदेश भाव समास ) हुरी निगाह । मुन्तो-  
 द—तकलोक । दिन काट—दिन पित्तदे ।

हुरी—हुरी के पाना ना मर मनने वाले अर्थात् राजीर ।  
 पतिवित्त—आर्थिक । अर्द्ध—अर्धवत् ।

( पृष्ठ—१२६ )

रोजिराज—रोजियों के राजा । रसूल—पैगम्बर । अल—  
 मरने वाला । अल—ही कभी हुआ न हा । रोजी—रोजी ।



( पृष्ठ—१२४ )

धेनवन—( धन्व समास ) तड़क भड़क । धावली—धावण  
 वं धौना के धार्मिक हस्त विशेष । रत्नावंधन—राखी बंधन ।  
 केशव—नियानुसार । रामदास ( तत्पुरुष समास ) श्रीरावन्द  
 वं के दोर । अन्धाकारी—( अन्ति + आवार + ई ) अन्धायी । बंधन  
 —बँध कर, काट कर । राष्ट्रोपना—अपना राज्य । जन्माष्टमी  
 ( जन्म + अष्टमी—दीर्घसंधि ) भादा कृष्णपक्ष की आठवीं तिथि ।  
 जन्मोत्सव—( जन्म + उत्सव ) जन्म का उत्सव । परतंत्रता—  
 पराधीनता । सरिता—नदी । देव-भमता—देव भेन । नद—नशा ।  
 नल—नतबला । निष्प्राय—( नि + प्राय वित्तर्ग संधि ) जीव  
 गेन । ढाँवा—ताका । आघात—घाट । नवधा नलि—नव  
 ग्धार की नलि दे हैं—धषण, जीर्जन, स्वरण, पाद नैषन, अर्पण,  
 बंधन दत्त, सारण और आत्मसमर्पण नौरतन की बटनी—मल्ल  
 इतना । तत्रस्तुव—डाह, इगं रम्ज—पैगम्बर । कलाम—  
 अथल । मजौद—कोरान शरीर ।

( पृष्ठ—१२५ )

तरकोव—ठंग । आलमगोर—औरंगजेब । पोलिटिकल—  
 राजनैतिक । शुद्ध—संशुद्ध । नज्दियों—धार्मिक । संन—समीर ।  
 हूटि—( कु + हूटि—अव्ययी भाव समास ) दुरी निगाह । मुनो-  
 वन—तरुलोक । दिन काटें—दिन बिताये ।

हूतो—हूँ के परमान्ता नद नानने वाले, अद्वैतवादी ।  
 अपरिचित—नाबाकिफ । अद्वैत—एकेश्वरवाद ।

( पृष्ठ—१२६ )

देशियाज—देशियों के राजा । रसखन—पुस्तकालय । अन्नर—  
 न मरने वाला । अन्नर—जो कभी बुढ़ा न हो । रंदी—रैंडी । न-



नाहन—पात्र । नन्कार—धुत । चार्च—अपराध । कुवत—  
रह ।

( पृष्ठ—१२६ )

बन्ध—आपत्ति । लुट सनान—तिनका की तरह । सलनन—  
रह । अधन—नीच ।

बादरबल्ल—निलने की बाह ।

परार्थ—बड़ विदेग का समय कौन सा है जिससे निलने की  
बाह में हो दिल भटकता फिर ।

परार्थ—बड़ शक्ति वस्तु देने हो मिल गयी ऐसे लैली का  
मनू और दुलहुन को बननितान ।

( पृष्ठ—१३० )

पेवन—अवानी । वावरी—पगड़ी । वान—रखे । कन—पति ।

परार्थ—अरी पगड़ी रखी अवानी को मद में क्यों भूलो रिकती  
है यह नैहर तो दो दिन का है, अन्न में तो पति से ही  
बान है ।

भाव यह है, कि संनारों दिन वानना में जोई अनिमान  
करता है, पर वने यह दिनार नहीं कि संनार में ही दिन रहना है,  
अने में तो एखल परनामा से ही बान है, वनी में पान न  
लगावे ।

मंदर—विवाह मंडप मंडा । परगुरी—दोरी । इल—  
परी । सेनात—रंग

परार्थ—दे अनेक परनामा । ऐसे लुट में किसी की लुट  
नहीं निरुद्ध में समान में लुटने लिए रिकती है । परार्थ—संनार  
में जोई बहुत खोजी पर वने समान का नहीं मिल ।

तदन—तब काल । लुट नैहर—लुटार का नैहर ।



बिचार किया। औरंगजेब के अग्यायी न्यायकारियों ने फाँसी का हुक्म दिया। पर इसमें क्या ? मरमद के लिए तो यह एक मामूली बात थी। वह तो अपने प्रीतम के वियोग में दुःखी था। वह तो प्रसन्न हुआ कि अब प्रीतम से जल्दी मिलन होगा।

सरमद का मिर तलवार से काँट डुकड़ा कर दिया गया। वह अपने प्रीतम से जा मिलता। वह महान्मा रस लोक में विराहो गया। पर अपना अनलहक का उपदेश छोड़ ही गया। सज्जन जन पराये के लिए कष्ट उठाने हैं। यदि वे कष्ट न उठावें तो उनकी परीक्षा कैसे हो ?

अग्याचार होता है अनता का क्षाने के लिये पर उसका फल उलटा ही होता है। अग्याचार से असन्तोष को वृद्धि होती है। रगड़ से चन्दन में भी आग उत्पन्न होती है। औरंगजेब के अग्याचार ने मरी हुई जाति में भी रक्त-संचार कर दिया। अकबर की कुटिल नीति चक्र में जो बहोरा थे, औरंगजेब ने उनको सचेत कर दिया, मिक्सल, मरहटे, राजपूत कमर बांध कर खड़े हो गये।

मतनामियों ने भी औरंगजेब के अग्याचारों को बड़ी बीरता से सामना किया और अग्नि में प्राण विमर्जन कर दिये।

#### प्रश्नोत्तर

१ प्रश्न—औरंगजेब के शासन काल में हिन्दुओं की क्या दशा थी ?

उत्तर—औरंगजेब के शासन काल में हिन्दुओं का बाहरी तड़क-मड़क बहो था, जो हिन्दुओं के शासन काल में था। हिन्दू अपने मना-पवहार पृथक् मनाने थे, पर वह नाम मात्र का था। जो रत्नायधन हिन्दुओं का एक मूल में था वह उसमें उमर समय वह शक्ति नहीं रह गयी थी जो हिन्दुओं के अगस्त्य कर हिन्दुओं में फूट का बाहर बन गया। हिन्दू अपना गौरवना में एकदम



३ प्रश्न—देवते देखते विवाह की घड़ी आ गई। अब प्रीतिम सदा  
मद के सिर में सिंदूर भरेंगे। उसके सिर में लालिम  
की रेखा दाढ़ेंगी। ऐसे बड़े व्याह, फिर चुटकी से डू  
मा सिंदूर घोड़ ही लगाया जायगा। मेम में भीने हुए  
मस्ती में चूर प्रेमियों की शादी। सर्पाङ्ग लाल कर  
होगा। खड्ग-शृंगार किया जायगा। सरमद माया से  
मिर नीचे किये, मकेच मे मिहुड़े हुए खड़ा है। प्यारे  
आकर हाथ मे ठुड़ी पकड़ मुँह ऊपर उठा दिया, को  
मिल गयीं, अंतर न रहा, बिछुड़े हुए मिल कर एक  
गये। जो तुम वही हम और जो हम वही तुम। ज  
प्रेमी बात है फिर हम और तुम का भेद कहाँ ?

उत्तर—सरमद की मौत का समय आ गया। अब परमात्मा  
संग उनका व्याह होगा अर्थात् अब परमेश्वर से मिल  
होगा। इस व्याह में सिंदूर की जरूरत नहीं है, हम  
तनवार की जरूरत है। अर्थात् यह परमात्मा का मिल  
मौत के जरिये से होगा। इसमें सब अंग गढ़  
लाल करना होगा। सरमद मरने के त्रिंसे मिर नीचे  
किये खड़ा है, उसके हृदय में परमात्मा का प्रका  
कृत गया, उसके यह आवास होने लगा।  
मुझमें और परमेश्वर में कोई अंतर नहीं है। हम  
तुम्हारे में भेद नहीं अब मैं परमात्मा से मिलक  
एक हो गया।

४ प्रश्न(क)—सरमद के विवाह में क्या वाजते हैं ?

(म) अंगारजने न मारज १० का माराया ?

(म) सरमद के अंतर १० का माराया ?

उत्तर (क)—सरमद के अंतर १० का माराया ?





(ब) दादा सरमद को मेधा खिदमत किया करता था।  
 इसलिए औरंगजेब ने मनभा था कि यह दादा का  
 निब होगा। दादा को मरवाने के बाद औरंगजेब ने  
 उसे भी मरवाने का विचार किया। उसको भय था कि  
 बर्हि ऐसा न हो कि यह अपनी गति से मुझे किसी  
 प्राणति में पानि दे। इसी भय से उसने सरमद को  
 मरवा डाला।

(ग) सरमद सूफी सन्तों का था। कुछ मुसलमान पन्थार  
 ऐसे हैं जो वे हैं जिन्होंने अर्द्धत बाद का मयार किया है।  
 सरमद भी अर्द्धत बादों था। यह बंजर परमात्मा को  
 मानने वाला था। संसार में दादू पदायों को ध्यत-  
 मय होकर था।

ददू—“दादाद दुरिया वे हैं मेहरे मेरे शवरंज के।

जिन्नों को पानि है मय मय मुल्ला अंग के।

इसका यह को बिसारे कोर कर कहा।

ददू—महात्मा रामजीव अंगरेजों को मरे थे, वहाँ ही मेरा दुरि ने  
 जगो कहा कि दादू कुछ मुझसे नीचिरे। इसी के  
 लख के लखके के यह यह कहा था।

## १४—अर्द्धत और मरदाना

— १५३

ददू—दादाद दुरिया वे हैं मेहरे मेरे शवरंज के।  
 जिन्नों को पानि है मय मय मुल्ला अंग के।  
 इसका यह को बिसारे कोर कर कहा।



ये लोग भयान लगते हैं—कम पावाह करते हैं। आशय—  
हर्षित। काल—नाराज।

समपातुहृत—नम्र के मुतायिक। मय मय—ठीक ठीक,  
समय। इच्छा—विपरीत।

हर्षित—निन्दित, नीत। मारण—मृत्यु, दण्डपन। मानने हैं—  
मानते हैं। संवाद—पद्याशास, कृष्ण। निन्दित—निन्दनीय, हर्षित।  
हर्षित—नीचता पूर्व।

( पृष्ठ—१३६ )

बड़े बड़े—बड़े बड़े से। विनाश—विनाश। मुँह देखो बाने  
देखा बाने हैं—जिसी देखा बाने बने हैं निन्दित मय के  
मुँह देख बाने बाने हैं। मय—मय—मय। देख—देख,  
देख। मय—मय—मय।

दुख—दुख। हंस—हंस, हंस—हंस। हंस—हंस।  
हंस—हंस। हंस—हंस। हंस—हंस। हंस—हंस।  
हंस—हंस। हंस—हंस। हंस—हंस। हंस—हंस।

( पृष्ठ—१३७ )

काल—काल। काल—काल। काल—काल। काल—काल।  
काल—काल। काल—काल। काल—काल। काल—काल।

काल—काल

काल—काल। काल—काल। काल—काल। काल—काल।  
काल—काल। काल—काल। काल—काल। काल—काल।  
काल—काल। काल—काल। काल—काल। काल—काल।  
काल—काल। काल—काल। काल—काल। काल—काल।









उसे तो इसी में आनन्द है, संतोष है कि यह अपना कर्त्तव्य पालन कर सकता है ।

अतः मनुष्य का यह कर्त्तव्य है कि सत्य को सब से ऊँचा स्थान दे, इसके लिये चाहें हमें कितना भी कष्ट सहना पड़े, कितनी भी हानि उठानी पड़े । सत्य बोलने से ही समाज में हमारा सम्मान होगा । सदा सत्य बोलने से ही कर्त्तव्य का पालन होता है । महाराज हरिश्चन्द्र ने सत्य का पालन किया इसके लिये उन्हें अनेक कष्ट सहने पड़े फिर भी उनका यह प्रण—

“ चन्द्र टरै सूरज टरै टरै जगत व्यषहार ।

पै दृढ़ धीहरिचन्द्र का टरै न सत्य विचार ॥ ”

ख गया । वे संसार में ही नहीं किन्तु परलोक में भी मान्य हुए । अतः सदा सच बोलना चाहिये । इसी से हम अपना कर्त्तव्य पालन कर लेंगे और सदा संतुष्ट और सुखी रहेंगे ।

प्रश्नोत्तर

१ प्रश्न—कर्त्तव्य यह वस्तु है जिसे करना हम लोगों का परमधर्म है और जिसके न करने से हम लोग और लोगों की दृष्टि से गिर जाते और अपने कुचरित्र से नीच बन जाते हैं । प्रारंभिक अवस्था में कर्त्तव्य का करना बिना द्वाप से नहीं हो सकता, क्योंकि पहले पहल मन धाप ही उसे करना ही चाहता । इसका आरम्भ पहले घर में ही होता है क्योंकि यही लड़के का कर्त्तव्य माता-पिता की ओर और माता पिता का कर्त्तव्य बड़का की ओर देख पड़ता है । इसके अनतिरिक्त पढ़ना, न्यानी-सेवक और स्त्री पुरुष के भी परस्पर अनेक कर्त्तव्य हैं । घर के बाहर हम मित्रों, पड़ोसियों और राजा प्रजापति के परस्पर कर्त्तव्यों को देखते हैं । इसलिये समाज में मनुष्य का



ओर ही कर्त्तव्य दिखायी पड़ता है। इसी कर्त्तव्य का पूरे तरीके से पालन करना हम लोगों का धर्म है। कर्त्तव्य पालन से ही हमारे जीवन की जीमा बढ़ती है। पर इस कर्त्तव्य का करना न्याय के ऊपर निर्भर है। यदि उस न्याय को हम समझ लें तो हम सहित उस कर्त्तव्य का हम पालन करने लगे।

( ख ) देखो पाठ का सारांश :

( ग ) परमधर्म—परम + धर्म. कर्मधारय समास।

कुचरित्र—कु + चरित्र अव्ययी भाष समास।

पति-पत्नी—पति और पत्नी द्वन्द्व समास

धर्मपालन—धर्म का पालन तत्पुरुष समास।

## १६—साहित्य की महत्ता

( पृष्ठ—१४० )

शब्दार्थ—ज्ञान-राशि—( ज्ञान को राशि. तत्पुरुष समास )  
ज्ञान का देर। सचित—इच्छित किया हुआ। शोक—खुशाना।  
भावों—विचारों। निदोष—( निः + दोष ) दोष रहित। रूपवती—  
सुन्दरी, रूपवाली। निखारिनी—भौख मारने वाली। आदरणीय  
—सम्मान के योग्य। धो मंगलना—देशवर्ध। मान मदादा—  
( मान और मदादा. द्वन्द्व समास ) सम्मान और महत्व। अव-  
लंबिन—आधिन।

पृष्ठ—१४१

जाति विशेष—किसी खान जाति के। उन्नतपुरुष—उन्नति  
अवनाति। उद्योग-भाव—भले हुए विचार। मगदन—पकना।  
ऐतिहासिक—इतिहास सम्बन्धी। घटनाचक्र—वाक्यान्तों राज-



--शक्ति । सत्ता—अधिकार, स्वत्व । उद्भयन—उद्भति । पदाक्रान्त—पद दलित । संजीविनी—मृतक को जिलाने वाली । आकर—खान । उन्मिष—उठे हुए । संवर्धन—वढ़ती । अज्ञानांधकार—अज्ञान रूपी अंधेरे । गर्त—गढ़ा । अस्तित्व—स्वत्व । महत्व—शाली—मर्यादापूर्ण । अभिवृद्धि—( अभि + वृद्धि ) कर्मधारय समास ) बढ़ती । अनुपम—मैन । समाज श्रेणी—समाज का श्रेणी । देश श्रेणी—देश का श्रेणी । जाति श्रेणी—जाति का श्रेणी । किं बहुना—अधिक क्या । आन श्रेणी—निज श्रेणी । आन होता—आन हुत्वा करने वाला ।

( पृष्ठ—१४४ )

समृद्ध—उद्भत । पेशपद—सम्पत्ति । अनुभव—अधिकार । स्थापित—कायम । विज्ञित—जाता हुआ । जेता—जानने वाला । उत्पादन—रचना । वृद्धि—वढ़ती । मंद—धीमा । अस्थानाधिक—अप्राप्तिक । अनैतर्गिक—अप्राप्तिक । अष्टादन—दुकन । विर—बहुत । काल—समय । माया जाल—झाड़नवर । अभिवृद्धि—वढ़ती । ग्रंथ रचना—पुस्तक लिखना । साधक—कार्य को करने वाला । वृद्धांत—अंतिम । निःसहाय—निरावलम्ब । निरपाद—उपाद हीन ।

( पृष्ठ—१४५ )

निर्धन—शक्ति । सुधुग्—परिवर्तन । अधम—नीच, पतित । हृतधता—क्रिये गये उपकार के न मानना । अदधित—पार को शुद्धि के लिये किया गया कार्य ।

ज्ञानाज्जन—ज्ञान पैदा । ज्ञेय—ज्ञान । ज्ञान—ज्ञान । अधा—अधम । अधम उपकार—अधम कलाम । अधम—अधम । अधम । लोक भाषा—लोकभाषा की भाषा । शब्द—शब्दों, विचारों, विचारों ।





सत् साहित्य की आवश्यकता है। यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि मस्तिष्क का विकास अन्धे साहित्यों द्वारा ही होता है। यदि हम चाहते हैं कि जोषित रहें, संसार की अन्य जातियों की समता करें तो हमको चाहिए कि पश्चिमपूर्वक अपने प्राचीन साहित्य की रक्षा तथा उसे परिवर्द्धित तथा उत्पादित करें।

साहित्य में वह शक्ति है, जो नैतिक, सामाजिक आदि बड़े बड़े परिवर्तन कर डालती है। और देशों तथा जातियों के देखने से यह बात स्पष्ट होता है। यूरोप में धार्मिक रुढ़ियों के साहित्य ने ही उखाड़ फेंका है, जातीय स्वतन्त्रता को बीज उसने ही बोया है, व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को उसने ही पाला पोसा है। फ्रांस में प्रजा सत्ता की वृद्धि तथा उत्पत्ति उसने ही की है। इटली का सिर उसने ही ऊँचा उठाया है। साहित्य मुर्दे दिल में भी रक्त का संचार करता है, पत्थरों को उठाता है, उधरों को और भी उधर करने वाला साहित्य ही है। साहित्य के उत्पादन तथा वृद्धि के लिए जो जाति प्रयत्न नहीं करती, वह अपना अस्तित्व ही खो देती है। अतः समर्थ होकर भी जो व्यक्ति साहित्य की उन्नति नहीं करता वह समाज द्रोही, देश द्रोही तथा जाति द्रोही है। उसे आत्म द्रोही तथा आत्मघातक कहने में भी कोई आपत्ति नहीं।

शक्ति जाली भाषा भी दूसरी भाषा पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लेती है। राजनैतिक प्रभुत्व के कारण भी विजिनों की भाषा पर जैताओं की भाषा अपना प्रभुत्व जमा लेती है। पर यह स्थायी नहीं रहता, जिस समय विजित जाति की निद्रा खुलती है, वह दूसरे भाषा के प्रभुत्व को दूर कर देती है। वह अपनी भाषा में नये प्रयोगों की रचना करके अपने माँह में रक्त वृद्धि करती है।

विदेशी भाषा भी पढ़ना चाहिए, पर अपनी भाषा की वृद्धि, उत्पादन आदि का सदा ध्यान रखना चाहिए। अपनी ही भाषा के



हैं, तथा वह निर्दोष भी हैं, पर यदि उसका अपना साहित्य नहीं है तो उसका आदर वैसा ही होता है, जैसे रूप संपन्न निखारिणी का । भाषा की सुन्दरता और मान मर्यादा उसके साहित्य पर ही अप्रज्वलित है । किसी भी जाति के उन्नति अधनति, ऊँच नीच भाष, धार्मिक विचार, समाज-संगठन, ऐतिहासिक घटनाओं के उलटफेर का तथा राजनैतिक स्थितियों का प्रतिबिम्ब देखने को यदि कहीं मिल सकता है तो उस भाषा के साहित्य ग्रन्थ में ही । समाज की शक्ति या उसकी लचीलता, समाज की कमजोरी या निष्कार समाजिक सम्बन्धता तथा असम्बन्धता का पता उसके साहित्य से ही लग जाता है ।

(ख) उत्कृष्टांपकर्म—उत् + कर्म + अप + कर्म—अप्ययी भाव समास, दीर्घ संधि—ऊँच नीच ।

संगठन—सम् + गठन—अप्ययी भाव समास—एकत्रित ।

प्रतिबिम्ब—प्रति + बिम्ब—अप्ययी भाव समास—छाया, परछाई ।

निर्लोचना—निर् + लोच + ता—अप्ययी भाव समास, कर्त्तृत्व का 'ता' प्रत्यय निष्कार ।

निर्लोकक—निर + लोका + क—अप्ययी भाव समास, निर्लोक करने वाला ।

। ग दत्ता पाठ का सार

( ११४ )

## १७—उसने कहा था

( पृष्ठ—१४२ )

जवान .. .. जान पक गये हैं—उसकी बानें सुनते सुनते परे-  
जान और दुःखी हो गये हैं ।

( पृष्ठ—१४१ )

यमूहार्ट बाबो.....जगाये—इनकी बांझी सुने । घोड़े की  
बाबो.....कल्ले हैं—घाड़े की नाभी को देखो गाली देते हैं जिसमे  
रिस्ता आदिर हों । बाँखें .....तरस खाते हैं—राह पजते दुधो  
को ही संवा पनाते हैं और अकमोस करते हैं । ग्लानि—दुःख ।  
सोम—पश्चात्ताप । आलमा जी—दुजर, सरकार । बाड़ा—बाइ-  
शाह । समष्टि—समूह । मीठी लुरी की तरह महीन मार करनी  
—छुट्टी शब्दों का प्रयोग करते हैं ।

( पृष्ठ—१४३ )

बेज—बात । परवेगी—विदेगी । गुण रहा था—तब भगव  
रहा था ।

निबटा—छुटी बापा ।

( पृष्ठ—१४८ )

संभावना—आशा निश्चय । मधु—माज । वैष्णवा  
—निष्ठा के मानन वाला । अत्र का इर्ष्या वालों काथा बना ।  
संदर्भ—संदर्भ । अत्र का इर्ष्या वालों काथा बना ।

.....

अत्र का इर्ष्या वालों काथा बना । अत्र का इर्ष्या वालों काथा बना ।  
अत्र का इर्ष्या वालों काथा बना । अत्र का इर्ष्या वालों काथा बना ।  
अत्र का इर्ष्या वालों काथा बना । अत्र का इर्ष्या वालों काथा बना ।





उस लड़के का नाम लहनासिंह था, और वह पलटन में भर्ती हो गया था। लहनासिंह छुट्टी लेकर अपने मुकदमे की पैरवी में घर गया था। वहाँ उसको उसके रंजोमेंट के अफसर की विध्वो मिली की फौज लाम पर जाती हैं, फौरन चलें आओ। साथ ही उसकी पलटन के सूबेदार हाजारासिंह की भी विध्वो मिली कि मैं और घोषासिंह भी लाम पर जाते हैं, चलते समय हमारे घर दोते जाना। साथ ही चलेंगे।

सूबेदार का गाँव लहनासिंह के रास्ते में ही पड़ता था। और सूबेदार उसे बहुत मानता था। लहनासिंह सूबेदार के यहाँ जा पहुँचा।

जब लाम पर चलने लगे तब सूबेदार ने कहा लहनासिंह तुम को सूबेदारिन बुला रहों हैं, जा मिल आ। लहनासिंह भीतर गया। सूबेदारिन को प्रणाम कि उसने असीस दी। सूबेदारिन ने पूछा क्यों लहनासिंह तुमने मुझे पहचाना।

लहनासिंह ने कहा—'नहीं'।

सूबेदारिन ने कहा—तेरी सगार हो गयी, धनू बल हो गयी, देखते नहीं देखती साहू, यह कह अचानक बाली घटना का याद दिलाया।

लहनासिंह ने कहा—हाँ पहचानता।

सूबेदारिन ने कहा—लहनासिंह ! मेरी एक दिनगी है, दिन तरफ से तुमने मेरे साथ अचानक में बचारे से, ऐसे ही मेरे इन पति पुत्रों का साथ पचना। मेरे कार लड़के में यही एक लड़का है, इन दोनों की रक्षा करना यही मैं तुम से निष्ठा माँगती हूँ।

हाजारासिंह लहनासिंह आदि लाम पर भेज दिये गये। वे फौज में एक पारी में काँ दिनों से रहे थे। देखते नहीं देखते







मारी मंदक द्विज जाती है और मी मी गज धरती  
उड़ान पड़ती है । हम गीरी गोले से कोर्त बचे तो लड़े ।  
नगर कोष्ट का जलजला सुना था । वहाँ दिन में पयोस  
जलजले होती हैं । जो कहीं मंदक से बाहर साफ़ या  
बुद्धनी निकल गई तो घड़ाम से गोली लगती है । न  
मात्रम बेरमान मिट्टी में लड़े हुए हैं या घाम की पत्तियों  
में शिरो रहते हैं ।

उत्तर—द्वि. द्वि. हमें भी लड़ाई कहते हैं। दिन रात लड़ाई में बैठे बैठे शरीर की दृष्टि से तकड़ मर्ती। यहाँ एक तो सुविधाएँ हैं। हमें गुना ज्ञाता है, हमारे पास और बर्तन बहुत हैं। यहाँ दो यहाँ पर मोती के अनाज में जान है। पदों फटने लगते हैं। तथा लड़ाई दिन उठती है, और जमीन भी भी गन्ध उड़ाने लगती है। हम गन्ध के मोती में यदि कोई मोटा बड़े तो लड़े। अगर कोई का मूक्य सुना मर या। पर यहाँ तो मोती के मोरे २० बार मूक्य हुआ करता है। जरा सा भी मूक्य में बाहर गन्ध या कोई भी निकलती नहीं मोती होती। माथूम नहीं वे मोती शत्रुओं वाले कोईमान मिट्टी में से होते हैं या पत्तों में दिने हैं।

२ प्रश्न—बड़े बड़े नदियों के बहने का क्या वातावरण की सहायता से होती है जिससे वे बह सकें और न रुक जाएँ? इसका उत्तर यह है कि जहाँ जल का संचय होता है वहाँ बड़े बड़े नदियाँ बहती हैं।

होने पर तरल खाते हैं, कभी उनके पैरों की अँगुलियों के पोरों को चाँप कर अपने ही को सताया हुआ बताते हैं और संतार भर को ग्लानि, निराशा और सौम के अवतार बने नाक की सोच चले जाते हैं, तब अमृतसर में उनकी दिरादरी वाले तंग बखारदार गलियों में हर एक लड़के वाले के लिए टहर कर सत्र का समुद्र उमड़ा कर, बच्चा खालसा जी, दया भाई जी। टहरना भाई जी, जाने दो जाला जी ' दया घादा ' कहते हुए सरेद फेंकें, खशरो और बतकों गन्ने और खोमवे और भारे वालों को अंगज से राह लेते हैं। मजाल है कि जी और साहब बिना मुने किसी को दटना पड़े, यह बात नहीं कि उनकी जीम चलता ही नहीं, चलती है, पर मीठी दुरी की तरह महान भार करती है।

उत्तर—जो लोग पड़े पड़े गहरों के एकदम गहरे बालों को अमान मुन कर पड़ड़ा गये हैं। उनसे हमारा फिर है कि अमृतसर के बम्बूकाट वाले को अमान का भी उदा नमूना देखें। अब पड़े पड़े गहरों को चौड़ी नदियों पर यह हाल है कि पोरों के चायुग में धुन्ने हुए इसके बाले कभी पोरों की ननों में अपना पनाह करने हैं, कभी यह चलते हुओं को बाँधा बना कर उन पर रहन करने हैं, कभी उनके पैरों को दुपल कर करते हैं कि नाग डाला जान ल गिया। इन प्रकार से करने को मजदूर हुआ बताते हैं। दुख प्यारदार, निरुत्ता का कर जो एक सोच में बने जाते हैं। तब अमृतसर में एक दम हर एक लड़के वाले के लिए टहर कर सत्र का समुद्र उमड़ा कर, बच्चा खालसा जी, दया भाई जी, टहरना भाई जी, जाने दो जाला जी ' दया घादा ' कहते हुए सरेद फेंकें, खशरो और बतकों गन्ने और खोमवे और भारे वालों को अंगज से राह लेते हैं। मजाल है कि जी और साहब बिना मुने किसी को दटना पड़े, यह बात नहीं कि उनकी जीम चलता ही नहीं, चलती है, पर मीठी दुरी की तरह महान भार करती है।



स्थापना—प्रतिष्ठा । स्वमुख—अपने मुख । राज्यक्रान्ति—राज्य में  
रजद फेर । कारागृह—जेलखाना ।

( पृष्ठ—१६७ )

अद्वितीय—वे जोड़, जिसके समान दूसरा न हो । सर्वमान्य—  
सब के माननीय । निर्माण—रचना । आधार—सहारा, अवलंब ।  
जोड़—थरावरी । पश्चिमी—पैरोपियन । पश्चात्—(अव्यय) बाद ।  
अवतार—उत्पन्न । व्यवस्था बांधि—नियम बद्ध किया । अलौ-  
किक—अपूर्व । सहाद्रि पर्वत-परंपरा—सहाद्रि पर्वत के माला ।  
धन-धान्य-समृद्ध—( अव्ययो तत्पुरुष समास ) ऐश्वर्य संगम ।  
पैदिक—शारीरिक । पराकाष्ठा—चरम सीमा । व्यापार केन्द्र—  
रोज़गार का मुख्य स्थान । राज प्रसादी—राज महर्जा । संशोधन—  
तालाबों । उद्यानों—बगीचों । शोडास्थलों—बिहार स्थान ।  
परिपूर्ण—भरा पूरा ।

( पृष्ठ—१६८ )

चक्रवर्ती—चक्रवर्ती उस राजा को कहते हैं जिसके राज्य में  
सूर्य अस्त नहीं होता, सारे पृथ्वी का राजा । घाक ईंठो घी—  
प्रभाव था । लोहा मानना—यश होना । गर्व—घमंड । गर्भिणु—  
घमण्डो । विजासी—देव्याश । दुराचारी—पापी । शुमारिया—  
बाजिकाप । रंगमहल—बिहार भवन । अस्त—न सड़ने योग्य ।

( पृष्ठ—१६९ )

अंतः कलह—भीतरी झगडा, घरेलू झगडा । अमानुषी—  
अप्राकृतिक । अष्ट—नष्ट ।

निरीक्षण—अवलोकन । नयनों—नेत्रों । द्विपे—हृदय । नयनों  
के साथ द्विपे के भी अंधे—नेत्र के अंधे और हृदय के काले ।  
प्रत्यक्ष—साक्षात् । प्रतिमा—मूर्ति । साधो—सती. सचरित्र ।  
दृष्टान्त—जदहृत् ।



( पृष्ठ—१७२ )

अधिकारी—हकदार । गहन—गूढ़ । दृढान्त—उदाहरण  
 धनुर्विद्या—( धनुस्+विद्या—विस्तरा संधि ) बाण चलाने की  
 विद्या । गणना—गिनती । समाज ग्रंथाला—समाज बंधन ।

तात्पर्य—मतलब, अभिप्राय । रत—संलग्न । आत्यंतिक—  
 सीमा से परे, परले दर्जे तक । हेतु—कारण ।

विलक्षण—विचित्र । भाष—विस्तार ।

( पृष्ठ—१७३ )

प्रतिकार—वहिष्कार । यथाशक्ति—( अव्ययी भाष समास )  
 ताकत भर । आत्मबलिदान—आत्मत्याग । सीमा—हृद । संतप्त—  
 दुःखी । लुब्ध—खिन्न ।

कृष्ण—अंधेरा, काला । पर्जन्यवृष्टि—बड़ी जोर की वर्षा ।  
 विघुहता—विघट्+लता—व्यञ्जन संधि, विजलों । नगर—  
 निवासी—दस्तों के रहने वाले । बनजारों—घूम फिर कर रहने  
 वालों, एक स्थान में न रहने वाले । सहृदय—सुन्दर हृदय,  
 दयालु । अस्तित्व—सत्ता, विद्यमानता । आर्य-संस्कृति—  
 आर्य पवित्रता, आर्य संस्कार । निष्कण्ट—निश्चय । समार—  
 वायु, हवा । निष्पाप वायु मंडल—पाप शून्य वायु मंडल । अनुज—  
 असीम, अपार । पराक्रमी—दलवान ।

( पृष्ठ—१७४ )

शरीर सामर्थ्य—शारीरिक शक्ति । मह विद्या—पहलकानों  
 कुश्ती लड़ने का हुनर । प्रवीण—चतुर । अग्रणी—मुखिया, नेता ।  
 काल रूप—काल के समान, मृत्यु के समान । स्पष्ट—पुष्टी ।  
 नम—आकाश । आदिभूत—प्रकट । ज्ञान विद्याया—माया  
 फैलायी ।

आग बहला—अपन कुद । अपन पुर—अपन के मर





वर्तमान—इस समय की। मूल—जड़। रहस्य—मर्म।  
 गंदा—संदेह। परिणाम—फल, नतीजा। दशमिचारिणी—दुरा  
 चारिणी। वर्णसंकर—दोगाली। सोचनीय—चिन्तनीय। दुराचारी  
 —अप्याचारी। परापहारी—पराये का हरण करने वाला।

( पृष्ठ—१८० )

बुद्धिपाद—वह बात जो बुद्धि के विचार से समझ में  
 आवे मानना। रत—संलग्न। अज्ञात जन्म—जिसका कोई शत्रु  
 न हो।

ज्ञानामृत—ज्ञानमुधा। अविच्छिन्न—जिसका निवेदन हो।  
 प्रापस्थिति—हाजत, दशा। निर्माण—रचना। मुखमस्तीति .....  
 हरोनकी—जो कुछ मुँह में आवे वह कह डालना, कि इस हाथ को  
 हँ होतो है। चरितार्थ—घटाया।

( पृष्ठ—१८१ )

धाकमण—धावा, हमला। धर्मत्रय—धर्मच्युत। अंतःफलद—  
 गृहयुद्ध। सत्सैन्य—सेना सहित। दालन्यकाज—गुजामी का  
 समद। सहन—द्वार। सामर्थ्य—शक्ति। अशतोर्ण—उन्मथ,  
 पैदा हो कर। दिग्दिगंत—देश विदेश, चारों ओर, सम्पूर्ण संसार  
 में। कीर्तिपताका—यशस्वजा।

( पृष्ठ—१८२ )

अलीकिक—अपूर्व। मात्रा—परिमाण। प्रभाव—महिमा।  
 केन्द्रघटना—जीवन घटनाओं को मुख्य बातें। साधनें—  
 उपायों। व्यक्तिगत—एक व्यक्ति का। दिव्य—अलीकिक।  
 समकालीन—उसी समय के। निःस्पृह—निर्जैन, धामना  
 रहित।

निष्कलंक—कलंक रहित। आरोपण—जगाया। कष्टहरण



गोप महि विद्या में बड़े प्रवीण थे । धीरुष्ण उसमें उनके  
अग्रणी हुए । दिन दिन गोपों और गोपाल का बल  
बढ़ने लगा । कंस घबरा उठा । उसे सर्वत्र काल रूप  
रुष्ण दिखाई देने लगे । जल में, स्थल में, नम में, सर्वत्र  
धीरुष्ण का काल-मूर्ति आविर्भूत हो कर उसे डराने  
लगा । रुष्ण को मारने के लिये कंस ने जाल बिछाया,  
पर उसमें यह आप ही जा फँसा और मारा गया ।

उत्तर—भादों रुष्ण आगमों की रात को रोदिया नक्षत्र में बड़े जोर  
की वृद्धि हो रही थी, बिजली बांध रही थी, उसी समय  
धीरुष्ण का जन्म हुआ । उसी रात में ही यमुदेव  
धीरुष्ण को अपने मित्र नन्द के यहाँ गोकुल में पहुँचा  
आये । ये गोप ये कौन ! ये दादूष बनो सखी ये । रुद्रानि  
अपना पेना छोड़ कर वैश्यों का पेना करने लगे थे ।  
अतः ये वैश्य सखिप दोनों थे । यदि इनमें शूद्र भी हों  
तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है । ये नगर में नहीं रहते  
थे । नगरों से दूर अपनी गाँवों की लेकर बनीं यहाँ कनीं  
बहाँ रहा करते थे । ये बनजारों के समान रहते थे । ये  
स्वभाव से बड़े मीठे थे, ये दयालु तथा ईश्वर भक्त थे,  
पर इनमें आर्यों का सम्मान नहीं रह गया था, ये कर्त्त-  
धन धर्म का पालन नहीं करते थे । ऐसे ही लोगों में  
धीरुष्ण ऐसे जीव रहने लगे । मेरे दो मित्र नन्द,  
यनों का स्वयंभूत वामु तथा माया के मन्त्र पालक  
नन्दानी ने सुन्दर तराज धारा धीरुष्ण को अपना पदा-  
कनी तथा निश्चल मेनी बना दिया । जलकाल में ही  
नारीरिक यज्ञ के अग्र्य कार्य कर दिखाये । गोप इनके  
... .. के जीते उनके लिये अपना



धर्म के सहारे । भागवत् सम्प्रदाय—भागवद् में कथित सम्प्रदाय ।  
 नवान—नया । विकास—प्रादुर्भूत । अनुयायी—अनुगामी । लोक  
 धर्म—संसार धर्म । उदामीन—विरक्त । समाज व्यवस्था—समा-  
 जिक नियम । ज्ञान विज्ञान—गाथादि । विराधी—वैरो । द्वितीय—  
 दूसरा । घोर—विकट । नैराश्य—नाउमेंदा, निराश । विषम—  
 अयुग्म, विकट । स्थिति—ज्ञात । मार्मिक—अद्भुत । साधन  
 —उपाय, प्रयत्न । संतुष्ट—मग्न शान्त । अन्याचारियों—अन्या-  
 यियों । दमन—मर्दन, नाश । विनाश—संहार । स्थापित—  
 कायम । भारतीय—हिन्दुस्तान का । विच्छिन्न—विजात । सगुण  
 —गुण सहित, नाश्वर । निर्गुण—निराकार ।

प्रथम वर्ण—पहले वर्ज । परंपरा—कामगत । वेदशास्त्र—  
 वेद शास्त्रों के जानने वाले, तन्त्रदर्शी ।

आचार्यों—उपाधियों । प्रवर्तित—रखाया हुआ । सम्प्रदाय—  
 दल । आधार—अवतार, सहारा । लोक धर्म-रक्षक—लोक  
 के धर्म को रक्षा करने वाले, तत्पुरुष समान । लोक रक्षक—लोक  
 को प्रसन्न करने वाला तत्पुरुष समान स्वयं—आकाश ।  
 नैराश्यमय—नाउमेंदों से भरा । सुधारण—अद्भुत के सम ।

( १४८—१४९ )

नैराश्य-जित नाउमेंदा से रक्षा हुआ ( तत्पुरुष समान )  
 जितना—तैद । प्रवृत्ता—प्रवृत्ता । लोक आधार स्थायी—  
 संसार के कार्य में ज्ञान । नैराश्य—कल्याणमय । सगुण—अद्भुत ।  
 संसार—प्रवर्तित । निराश—नाउमेंद ।

आशय—सहाय । उत्तार—हृदय में निक्षेपित ।

प्राज्ञता—पुष्ता । प्रदान की—दी । मान्य—महान्तर ।



## सारांश

जित समय हिन्दुस्तान में मुसलमानों का पूर्ण रूप से राज्य स्थापित हो गया, उस समय से चारों ओर काया समान हो गई। हिंदी कविता का प्रवाह राजकीय क्षेत्र में हट कर, मलिपय और प्रेम पय की ओर चल पड़ा। बल पराक्रम की ओर से हट कर नवान् की ओर लग गया। यह समय देश के नैराश्य का था। निरा भगवान् की शरण के अन्य कोई अवलम्ब न था। रामानंद ब्रह्माचार्य ने जित भक्ति रस का संघर्ष किया उसी दो कबीर सुर आदि ने जन्ता के बीच प्रवाहित किया। मुसलमान कवियों ने प्रेम पय की मनोहरता दिखा कर लोगों का मन लुभाया। इस भक्ति तथा प्रेम के रंग में देश अपना दुःख भूल गया।

उस समय भक्तों के दो दल थे। एक दल प्राचीन धर्म के नवीन विकास का ही अनुयायी था। और दूसरा लोक धर्म में विरक्त समाज व्यवस्था तथा ज्ञान विज्ञान का विरोधी था। यह दूसरा दल जित घोर नैराश्य काज में उलझ हुआ उसके सामंजस्य साधन में रुत रहा। उसी उलझ ही प्रेरणा ग्रहण करने का साहस हुआ। जितना मुसलमानों के यहाँ भी स्थान था। मुसलमानों के रंग रह का इन दल के महा-त्माओं का भगवान् के उन मत पर जन्म की भक्ति की से जन्म का साहस नहीं हुआ जो प्रायः सर्वत्र ही समान रहता है। दुर्लभ का संसार करना है। प्रायः ही करने काट में नरक नहीं हुए।

एक दल ने प्राचीन धर्म का ही नवीन भक्ति मार्ग का अवलम्बन किया। भगवान् के उन रूप को जन्म में ला रमना, जित रूप से भगवान् दुर्लभ का समन करने हैं, तथा धर्म की स्थापना करते हैं। मुसलमानों ने इसी भक्ति के गुण रस में सौंद





कर भक्ति एवं सौंदर्य प्रेम पथ की ओर चल पड़ा। देश में  
 मुसलमान साम्राज्य के पूर्णतया अस्तित्व हो जाने पर  
 धीरोन्माद के यह स्वतन्त्र क्षेत्र न रह गया। देश का  
 ध्यान अपने पुण्यार्थ और यत्न पराक्रम का ओर से हट  
 कर भगवान् की भक्ति तथा देश-दायित्व के ओर गया।  
 देश का यह नैराश्य काल था जिसमें भगवान् के सिवा  
 और कोई सहारा नहीं दिखाई देता था। रमानन्द बहुभा-  
 चार्य ने जिस भक्ति रस का प्रभुत्व स्थापित किया। कबीर  
 और मूर आदि को राधार ने उसका संचार जनता के  
 बीच किया। साथ ही कृतवन, जायसी आदि मुसलमान  
 कवियों ने अपनी प्रबंध रचना द्वारा प्रेमपथ की मनो-  
 हरता दिखा कर लोगों को लुभाया इस भक्ति और प्रेम  
 के रंग में देश ने अपना दुःख भुलाया, उसका मन  
 बहला।

उपरोक्त पथ के सरल हिन्दा में लिखा।

हमीर के शासनकाल के समाप्ति के साथ ही चरखों की  
 धार गुलामाणा का समय समाप्त होता है। उस समय  
 हिन्दी कविता की छाया राजनैतिक क्षेत्र से हट कर  
 भक्ति तथा प्रेम पथ की ओर प्रवाहित हुई। देश में  
 मुसलमानों का पूर्णतया राज्य स्थापित हो गया। धीरो-  
 न्माद के लिए स्वतन्त्र भाग हो नहीं रह गया। अतः देश  
 का ध्यान अपने पुण्यार्थ और यत्न पराक्रम की ओर से  
 हट कर भगवान् की भक्ति रस तथा उदारता की ओर  
 गया। यह देश का लिये नैराश्य का समय था। उसे  
 सिवा भगवान् के अवसर के और कोई सहारा ही नहीं  
 था। रमानन्द तथा बहुभाचार्य के संबोधित भक्ति रस का



गोप मह विद्या में बड़े प्रवीण थे । धीरुष्य उसमें उनके  
अग्रणी हुए । दिन दिन गोपों और गोपाल का बल  
बढ़ने लगा । कंस घबरा उठा । उसे सर्वत्र काल रूप  
रुष्य दिखाई देने लगे । जल में, स्थल में, नभ में, सर्वत्र  
धीरुष्य की काल-मूर्ति आविर्भूत हो कर उसे डराने  
लगी । रुष्य को मारने के लिये कंस ने जाल बिछाया,  
पर उसमें वह घ्राप ही जा फँसा और मारा गया ।

उत्तर—भादों रुष्य अपना की रात की रोहिया नक्षत्र में बड़े और  
की वृद्धि हो रही थी, पिजली कंध रही थी, उसी समय  
धीरुष्य का जन्म हुआ । उसी रात में ही वसुदेव  
धीरुष्य को अपने मित्र नन्द के यहाँ गोकुल में पहुँचा  
आये । ये गोप ये कौन ? ये यादव वंशी क्षत्री थे । इन्होंने  
अपना पैसा छोड़ कर वैश्यों का पैसा करने लगे थे ।  
अतः ये वैश्य क्षत्रिय दोनों थे । यदि इनमें शुद्र भी हों  
तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है । ये नगर में नहीं रहते  
थे । नगरों से दूर अपनी गौरों को लेकर कभी यहाँ कभी  
पहुँचा रहा करते थे । ये वनजारों के समान रहते थे । ये  
स्वभाष बड़े सोधे थे, ये दयालु तथा ईश्वर भक्त थे,  
पर इनमें आर्यों का संस्कार नहीं रह गया था, ये वयो-  
धन धन का पालन नहीं करते थे । ऐसे ही लोगों में  
धीरुष्य पले और बड़ने लगे । गोपों के निःद्वल प्रेम,  
वनों का स्वच्छन्द वायु तथा गोपों के सरस पापशून्य  
मदहली ने सुन्दर गरोर धारी धीरुष्य को अपार परा-  
क्रमी तथा निःद्वल प्रेमी बना दिया । बाल्यकाल में ही  
शारीरिक बल के अपूर्व कार्य कर दिखाये । गोप इनको  
अपने प्राण तुल्य समझते थे और उनके लिये अपना



मैं है सहारे । भागवत् सम्प्रदाय—भागवद् में कथित सम्प्रदाय ।  
 लोक—लोक । विकास—प्रादुर्भूत । अनुयायी—अनुगामी । लोक  
 र्म—लोक धर्म । उद्दामनीन—धिरक्त । समाज व्यवस्था—समा-  
 जिक नियम । ज्ञान विज्ञान—शास्त्रादि । विराधी—ईरो । द्वितीय—  
 रूप । घोर—विकट । नैराश्य—नाउमेदी । निराग । विषम—  
 गहन, विकट । स्थिति—ज्ञान । मानं जस्य—अद्वय । साधन  
 —उपाय, प्रयत्न । संतुष्ट—मग्न मान्त । अन्याचारियों—अन्या-  
 यों । दमन—मर्दन, नाश । विनाश—संहार । स्थापित—  
 गपन । भारतीय—हिन्दुस्तान का । विश्व—खिलाक । सगुण  
 —गुण सहित, साकार । निर्गुण—निराकार ।

प्रथम धर्म—पहले दर्ज । परंपरा—क्रमगत । वेदशास्त्र—  
 वेदशास्त्रों के जानने वाले, तत्त्वदर्शी ।

आचार्यों—उपाधियों । प्रवर्तित—चलाया हुआ । सम्प्रदाय—  
 ल । आधार—अवलम्ब, सहारा । लोक धर्म—रक्षक—लोक  
 धर्म को रक्षा करने वाले, तत्पुरुष समाज । लोक रंजक—लोक  
 में प्रसन्न करने वाला, तत्पुरुष समाज स्वरूप—आकार ।  
 नैराश्य—नाउमेदी से भरा । सुधारित—अनृत के रत ।

( ४४—१२७ )

नैराश्य-जनित नाउमेदी ने पैदा हुआ ( तत्पुरुष समाज )  
 उन्नता—खेद । प्रकुलता—प्रसन्नता । लोक व्यापार व्यापी—  
 लोकोपकारियों में जान । मग्नमय—कल्याणमय । अनृष—अनृत ।  
 त्वार—प्रवर्धित । निराग—नाउमेदी ।

आश्रय—सहारा । उद्धार—हृदय से निकली हुई बात ।

प्रौढ़ता—पुष्टता । प्रदान की—दी । मानव—मनुष्य । सर-



## सारांग

जिस समय हिन्दुस्तान में मुसलमानों का पूर्ण रूप से राज्य स्थापित हो गया, उस समय से चारों की धीरे-धीरे गाथा समाप्त हो गयी। हिन्दों की धर्म की प्रथाएँ राजकीय क्षेत्र से हट कर, नैतिक और प्रेम पथ की ओर चले पड़ी। बल पराक्रम की ओर से हट कर नैतिक की ओर लग गया। यह समय देश के नैतिक का था। तब भगवान् की शक्ति के अन्य कोई अवलम्ब न था। रामानन्द महर्षि ने जिस भक्ति रस का संचय किया उसी की कबीर सुर आदि ने जनता के बीच प्रचारित किया। मुसलमान कवियों ने प्रेम पथ की मनोहरता दिखा कर लोगों का मन लुभाया। इस भक्ति तथा प्रेम के रंग में देश अपना दुःख भूल गया।

उस समय भक्तों के दो दल थे। एक दल प्राचीन धर्म के नवीन विकास का ही अनुयायी था। और दूसरा लोक धर्म से विरक्त समाज व्यवस्था तथा ज्ञान विज्ञान का विरोधी था। यह दूसरा दल जिस घोर नैतिक काल में उत्पन्न हुआ उसके सामंजस्य साधन में रुम रहा। उसका उतना ही प्रयत्न करने का साहस हुआ। जितना मुसलमानों के यहाँ भी स्थान था। मुसलमानों के बीच रह कर इस दल के महात्माओं का भगवान् के उस रूप पर जनता की भक्ति को ले जाने का साहस नहीं हुआ जो अन्याचारियों का दमन करता है दुष्टों का संहार करता है। अतः वे अपने काय में सकल नहीं हुए।

पहला दल ने प्राचीन आचार्यों द्वारा प्रदर्शित भक्ति मार्ग का अवलम्बन किया। भगवान् के उस रूप को जनता में ला रखा, जिस रूप से भगवान् दुष्टों का दमन करते हैं, तथा धर्म की स्थापना करते हैं। तुलसीदास ने इसी भक्ति के सुधा रस से सर्व





कर भक्ति पथ और प्रेम पथ की ओर चल पड़ा । देश में मुसलमान साम्राज्य के पूर्णतया प्रतिष्ठित हो जाने पर घोरान्ताह के यह स्वतन्त्र सत्र न रह गया ; देश का ध्यान अपने पुरुषार्थ और बल पराक्रम की ओर से हट कर भगवान् की भक्ति तथा दया दासिण्य की ओर गया । देश का यह नैराश्य काल था जिसमें भगवान् के सिवा और कोई सहारा नहीं दिखाई देता था, रमानन्द बहुभाचार्य ने जिस भक्ति रत्न का प्रभूत संचय किया, कबीर और सूर आदि की बाग्यारा ने उसका संचार जनता के बीच किया । साथ ही कुतबन, जायसी आदि मुसलमान कवियों ने अपनी प्रबंध रचना द्वारा प्रेमपथ की मनोहरता दिखा कर लोगों को लुभाया इन भक्ति और प्रेम के रंग में देश ने अपना दुःख भुलाया, उसका मन बहला ।

( क ) उपरोक्त पथ को सरल हिन्दी में लिखो ।

हमारे शासनकाल के समाप्ति के साथ ही चारों ओर गुरुगोध का समय समाप्त होता है । उस समय हिन्दी कविता की घारा राजनैतिक क्षेत्र से हट कर भक्ति तथा प्रेम पथ की ओर प्रवाहित हुई । देश में मुसलमानों का पूर्णतया राज्य स्थापित हो गया । घोरान्ताह के लिए स्वतंत्र भाग हो रहा रह गया । अतः देश का ध्यान अपने पुरुषार्थ तथा बल पराक्रम की ओर से हट कर भगवान् की भक्ति, दया तथा उदारता की ओर गया । यह देश के लिये नैराश्य का समय था । उन्ने सिवा भगवान् के अवनन्द के और कोई सहारा ही नहीं था । रमानन्द तथा बहुभाचार्य के मंडित भक्ति रत्न का



